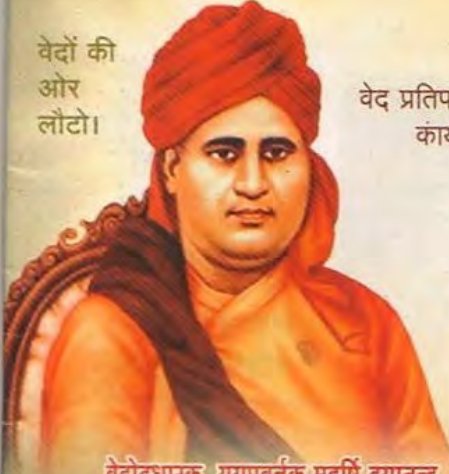


वेदों की
ओर
लौटो।



वेदोद्धारक, युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द

॥ ओ३म् ॥

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को जन-जन तक पहुँचाने हेतु
कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन



महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

वर्ष १७ अंक ५/६ १० मई/जून २०१७



महान समाजसुधारक राजा एवं म.दयानन्द के अनुयायी



छत्रपति राजर्षि शाहू महाराज

जन्म दिवस(२६ जून) पर शतशः नमन !





महाराष्ट्र आर्य सभा
के उपप्रधान श्री
दयारामजी बसैये
को **‘सावरकर
रत्न पुरस्कार’**
प्रदान करते हुए
महाराष्ट्र
विधानसभा के
अध्यक्ष श्री
हरिभाऊजी
बागडे।

शिवणखेड ता.चाकूर
जि.लातूर-आर्यसमाज
के नवनिर्मित भवन का
उद्घाटन करते हुए
विधायक श्री
विनायकरावजी पाटील
एवं साथ में हैं
पूर्वविधायक श्री
बब्रुवाहनजी खंदाडे।



दै.सकाळ
(औरंगाबाद) के
कार्यालय में सम्पादक
श्री संजयजी वरकड
के साथ वैदिक गर्जना
के सम्पादक
डॉ.नयनकुमार आचार्य
एवं आर्य समाज,
औ.बाद के उपमन्त्री
श्री जनार्दनजी भडके।



महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना



सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,९९८
दयानन्दाब्द १९४

कलि संवत् ५९९८
ज्येष्ठ/वैशाख

विक्रम संवत् २०७४
१० मई/जून २०१७

प्रधान सम्पादक	मार्गदर्शक सम्पादक	सम्पादक
माधव के.देशपांडे (९८२२२९५५४५)	डॉ.ब्रह्ममुनि (९४२९९५९०४)	डॉ.नयनकुमार आचार्य (९४२०३३०९७८)
सहसम्पादक	प्रा.देवदत्त तुंगार(९३७२५४९७७७) प्रा.ओमप्रकाश हीलीकर(९८८९२९५६९६), प्रा.सत्यकाम पाठक(९९७०५६२३५६), ज्ञानकुमार आर्य(९६२३८४२२४०)	

अ नु क म

हिन्दी

वि
भा
ग

मराठी

वि
भा
ग

१) सम्पादकीयम्	५
२) राज्यस्तरीय पुरोहित शिबिर-विज्ञापन	७
३) शाहु महाराज का ऐतिहासिक भाषण	८
४) शुद्धि आन्दोलन और घरवापसी	१३
५) स्व.धर्मवीरजी कृतज्ञता गौरव स्थिरनिधि-आवाहन	१८
६) सभा समाचार	२३
७) शोक समाचार	२४
१) आर्य समाज का व कशासाठी?	२८
२) विवाहसोहळ्यातील मंगल अक्षता	३१
३) वंदोमध्ये गोहत्या, गोमांस भक्षण नाही.....	३३
४) सूर्यपंथेचि चालावे	३५
५) शिवणखेड आयर्य समाज भवन उद्घाटन वृत्त	३८
६) वार्ताविशेष	४०
७) शोकवार्ता	४६

* प्रकाशक *

मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज,
परली-वैजनाथ ४३९५९५

* मुद्रक *

वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज, परली-वै.

वैदिक गर्जना के शुल्क

वार्षिक रु.१००/-

आजीवन रु.१०००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होगा।

वैदिक गर्जना-विशेषांक ***

३

*** मई-जून-२०१७



पर्यावरण का रक्षण

शन्नो वातः पवतां शन्नस्तपतु सूर्यः।

शन्नः कनिक्रददेवः पर्जन्यौ अभि वर्षतु॥ (यजु.३६/१०)

पदार्थान्वय—हे परमेश्वर× वा विद्वान् पुरुष× जैसे (वातः) पवन(नः) हमारे लिये(शम्) सुखकारी(पवताम्) चले, (सूर्यः) सूर्य(नः) हमारे लिये (शम्) सुखकारी (तपतु) तपे, (कनिक्रदत्) अत्यन्त शब्द करता हुआ(देवः)उत्तम गुणयुक्त विद्युत् रूप अग्नि(नः) हमारे लिये(शमः) कल्याणकारी हो और (पर्जन्यः) मेघ हमारे लिये (अभि, वर्षतु) सब ओर से वर्षा करे, वैसे हमको शिक्षा कीजिए।

भावार्थ — इस मन्त्र में वाचकलुप्तोमालङ्कार है । जिस प्रकार से वायु, सूर्य, बिजुली और मेघ सबको सुखकारी हों, वैसा अनुष्ठान किया करो।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के आगामी कार्यक्रम

दि.२७ जून से २ जुलाई २०१७- आर्य समाज सम्भाजीनगर के पूर्ण सहयोग से

—० पर्जन्यवृष्टि तथा पर्यावरण रक्षा महायज्ञ ०—

स्थान- गांधेली ग्राम, एअरपोर्ट के पीछे, सम्भाजीनगर(औरंगाबाद)

आमन्त्रित विद्वान- डॉ.कमलनारायणजी आचार्य(रायपूर-छत्तीसगढ़)

दि.२ जुलाई से ९ जुलाई २०१७ - आर्य समाज परली के सहयोग से

—० राज्यस्तरीय पुरोहित प्रशिक्षण शिविर ०—

स्थान-स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम, परली-वैजनाथ जि.बीड

आमन्त्रित विद्वान-पं.राजवीरजी शास्त्री(सोलापूर), पं.प्रतापसिंहजी चौहान

दि.२४ जुलाई से २१ अगस्त २०१७ - सभी आर्यसमाजों के सहयोग से

—० राज्यस्तरीय श्रावणी वेदप्रचार महोत्सव-२०१७ ०—

स्थान-१३५ स्थानों के आर्यसमाज/कार्यक्रम स्थल

उत्तर भारत से १२ एवं राज्य से लगभग ५० विद्वान् व भजनोपदेशक आमन्त्रित।

उद्देश्य कितना भी पवित्र व कल्याणकारी क्यों न हो ? जब तक उसे सामयिक परिस्थिति व व्यावहारिकता के साथ नहीं जोड़ा जाता, तब तक उसकी सफलता सिद्ध नहीं हो सकती। साथ ही प्रचलित व्यवस्था को बदलने हेतु जनता में उस तरह के संस्कार स्थापित करने के लिए प्रयत्न करना भी उतना ही आवश्यक होता है। अन्यथा अपनी श्रद्धा व धार्मिक भावना लोगों पर लाद देंगे, तो उसके विपरित परिणाम आने का भय रहता है। सम्प्रति अपने देश में कई मुद्दों को लेकर असमंजस की स्थिति बन चुकी है। विशेषतः गोवंश-प्रतिबन्ध, गोमांस सेवन पाबन्दी तथा हाल ही में गऊओं के क्रय-विक्रय के सन्दर्भ में जारी सरकारी अध्यादेश के कारण भारतीय राजनीति, सामाजिक जीवन तथा धार्मिक क्षेत्र में हलबली मच गयी है।

गोमाता की सुरक्षा व संवर्धन के विषय पर पिछले डेढ़-दो साल से देश में काफी विवाद खड़े हो रहे हैं। हिन्दुत्ववादी संगठन गोरक्षा के मुद्दे को लेकर आन्दोलन व हिंसापर उतारू हो रहे हैं, तो गोमांस सेवन के पक्षधर संविधान का आधार लेकर 'खाने-पीने' की स्वतन्त्रता बता रहे हैं। प्रगतिशील विचारों के अनुयायी, समाजवादी, सेक्युलरवादी, कम्युनिष्ट, तथा आधुनिक विज्ञानवादी लोग भी गौ व अन्य पशुओं के मांसाहार के पक्ष में खड़े हैं। अर्थशास्त्रियों व मिडियावालों को भी गोहत्या प्रतिबंध से भारतीय अर्थव्यवस्था चरमराने का भय लग रहा है। क्योंकि भारत से कई देशों को गोमांस व गोचर्म का निर्यात होता है और जिससे देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने में बहुत फायदा होता है, आदि-आदि... कुछ लोगों में अपने-अपने धार्मिक अधिकारों को लेकर उनके रक्षा की भी माँग हो रही है। हाल ही में टी.व्ही.चैनल पर कन्नूर (केरल) में काँग्रेस के आठ युवा कार्यकर्त्ताओं को गाय को काटते हुए व उसका माँसभक्षण करते हुए दिखाया गया, जिसमें काँग्रेस संसदीय कमिटी के रिजिल मक्कुटी भी शामिल हैं। इन्हें सरकारने गिरफ्तार भी कर लिया है। इस तरह के माहौल से देश कैसे चलेगा?

यह निश्चित है कि गौ हमारी माता है, उसके हम प्राणिमात्र पर विशेषतः मानव समुदाय पर अनेकों उपकार हैं। असंख्य श्रेष्ठ गुणों के कारण वह सभी पशुओं में ऊँचे स्थान पर हैं। इसीलिए तो वह अन्य सभी पशुओं का प्रतिनिधित्व करती है। लेकिन यह उसका मातृत्व व श्रेष्ठत्व वैज्ञानिक व शास्त्रीय दृष्टि से सभी के लिए कितना समुचित है तथा सभी दृष्टि से गऊमाता कितनी उपयुक्त है? यह आज के जमाने में सब के सामने प्रस्तुत करना अत्यंत आवश्यक है। जो गऊमाता के विरोधी है, उनमें भी यह विश्वास व श्रद्धाभाव जगाना आवश्यक है कि, गऊ का दूध, दही, तक्र, मक्खन, घी, गोमूत्र, गोबर आदि मानव के सुस्वास्थ्य के लिए, बुद्धि के विकास के लिए तथा सभी प्रकार की बिमारियों के लिए

अत्यन्त लाभकारी है। गौ पालन से घर, कृषि, परिवार पूरी तरह से पवित्र व निर्मल होता है। पर्यावरण की रक्षा में गऊमाता को वरीयता दी गयी है। इन्हीं बातों को लेकर वेदशास्त्र में गऊ को +अग्न्या' कहा गया है। ऋग्वेद में एक स्थान पर उसे रुद्रों की माता, वसुओं की कन्या, आदित्यों की बहन और अमरपन का केन्द्रस्थान बताया गया है। इसीलिए +मा गाम् अनागाम् अदितिं वधिष्ट।' ऐसा कहते हुए उसकी हत्या का पूर्णतः निषेध किया है। अनेकों उपदेश व संदेश भी गऊ के विषय को लेकर दिये गये हैं। इस दृष्टि से गऊमाता का महत्व है, न कि वह चैतरणी नदी को पार कराकर हमें हमारे मुक्ति के द्वार खोल देती है। गोमूत्र को केवल छिड़कने मात्र से हमारा घर व परिवार शुद्ध होता है, यह एक अंधःविश्वास की बात हो सकती है। बजाय इसके आयुर्वेद के अनुसार गोमूत्र को प्राशन करने से अनेकों प्रकार की बिमारियाँ विशेषतः पेट की बिमारियाँ दूर हो जाती हैं। अतः प्रत्येक मानवमात्र चाहे वो हिंदू हो या मुसलमान, ख्रिश्चन हो या जैन-बौद्ध-सिख सभी के लिए गऊमाता वरदायिनी सिद्ध होती है।

गऊमाता का पवित्र सन्देश लोगों तक पहुँचाएँगे या उनमें इस प्रकार के संस्कारों का बीजारोपन करेंगे, तो निश्चय ही उनकी सोच भी गऊमाता की रक्षा व संवर्धन में अनुकूल सिद्ध हो सकती है। आर्य समाज का गोरक्षा आन्दोलन और अन्य सम्प्रदायों व संघठनों के गो आन्दोलन अलग-अलग विषयों को प्रकट करते हैं। आर्य समाज का उद्देश्य गऊमाता की रक्षा में पूर्णतया सूक्ष्म है। किन्तु अन्य पंथी लोग गऊ को केवल धार्मिक दृष्टि से श्रद्धा का विषय बनाते हैं। गऊ का मुख, चार पैर व उसकी पूँछ आदि को लेकर अज्ञान, अंधःविश्वास को फैलाते हैं। गऊ की मूलभूत रक्षा, उसके चारे-पानी की व्यवस्था तथा दूध न देनेवाली या बुटी गायों की व्यवस्था करना ही सही अर्थों में पूजा व सेवा है, अन्यथा यह सब न करते हुए उसे पूजा मात्र का स्थान देकर उसे माता मानना व्यर्थ है। इस तरह की गऊसेवा अधुरी व खोक्ली ही है। किन्तु आर्यसमाज गौ की पूर्णतः रक्षा में कदम बढ़ाता है।

दुख का विषय है कि गोमांस का सेवन करनेवालों में केवल मुसलमान, ईसाई ही नहीं बल्कि बड़े पैमाने पर हिन्दू भी हैं। प्रत्यक्ष मोदी जी के सहयोगी में गृहराज्यमन्त्री किरेन रिजीजू ने भी गोमांस की वकालत करते हैं। उनका कहना है कि, भले ही अन्य हिन्दू बहुल राज्यों में गोहत्या पर पाबन्दी लगे, किन्तु उनके निजी राज्य अरुणाचल प्रदेश, मेघालय आदि राज्यों में बीफ बन्दी हो ही नहीं सकती। इसी के साथ अन्य राज्यों में भी भाजपा के ही नेतागण इसके विरोध में हैं। तब गोहत्या प्रतिबंध का प्रयास कैसे सफल हो सकता है ? इसके लिए तो केवल वैचारिक परिवर्तन व जनसामान्यों तक सुसंस्कारों व गोमाता व अन्य पशुओं के प्रति दयाभाव जगाने की अत्यन्त आवश्यकता है....

- नयनकुमार आचार्य



वयं राष्ट्रे जागृत्याम पुरोहिताः।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
आर्य समाज, परली वैजनाथ की सहयोग से



* राज्यस्तरीय पुरोहित प्रशिक्षण शिविर *

रविवार दि.२ जुलाई से रविवार ९ जुलाई २०१७

स्थान : श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम, नन्दागौल मार्ग, परली-वै.

प्रिय संस्कारप्रेमी सज्जनो ×

सम्प्रति योग्य पुरोहितों की संख्या घटती जा रही है। संस्कारेच्छुक लोग पुरोहितों के अभाव में इच्छा होते हुए भी विवाह, नामकरण, अन्त्येष्टि आदि वैदिक सोलह संस्कारों का अनुष्ठान कर नहीं पाते। परिसर में पुरोहित न होने से बाहर से पुरोहित बुलाना कठिन होता है। इसी कारण वैदिक संस्कारों का प्रचार व प्रसार नहीं हो रहा है। ऐसी अवस्था में आर्य समाज का नैतिक व सामाजिक कर्तव्य बनता है कि वे अपनी आर्य समाजों में वैतनिक अथवा अवैतनिक पुरोहित रखें। पुरोहितों के निर्माणार्थ प्रान्तीय सभा गत कई वर्षों से राज्यस्तर पर पुरोहित प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन करती है। इस वर्ष भी दि.२ से ९ जुलाई २०१७ तक निम्नलिखित मार्गदर्शक विद्वानों की उपस्थिति में पुरोहित प्रशिक्षण शिविर संपन्न हो रहा है।

* प्रमुख मार्गदर्शक -पं.राजवीरजी शास्त्री (सोलापूर)* भजनोपदेशक- पं.प्रतापसिंहजी चौहान

* सह मार्गदर्शक -डॉ.वीरेन्द्र शास्त्री, डॉ.नयनकुमार आचार्य, प्रा.अरुण चव्हाण,
लक्ष्मणराव आर्य, तानाजी शास्त्री, विज्ञानमुनिजी

इस शिविर में प्रातः ४.३० से लेकर रात्रि ९.३० तक की व्यस्त दिनचर्या में बृहद् यज्ञ विधि, १६ वैदिक संस्कार, नित्य नैमित्तिक कर्म, प्रवचन, भजन आदि के साथ ही वैदिक सिद्धान्तों का प्रशिक्षण दिया जाएगा। अतः इस पुरोहित बनने के इच्छुक महानुभाव इस पुरोहित प्रशिक्षण शिविर में सम्मिलित होवे। प्रत्येक आर्य समाज अपनी ओर से ३ से ५ प्रशिक्षणार्थियों को शिविर में अवश्य भेजें। प्रशिक्षणार्थी दि.१ जुलाई को सायंकाल तक शिविरस्थान पहुँचे।

विशेष - १) प्रवेशार्थी के लिए नाममात्र शुल्क रु.२००/- रखा गया है।

२) महिला प्रशिक्षणार्थीयों के लिए निवास की स्वतन्त्र व्यवस्था की गयी है।

३) प्रशिक्षणार्थी आते समय ऋतु अनुकूल वस्त्र, ओढना-बिछौना, थाली, लोटा, कापी, पेन व म.दयानन्द कृत 'संस्कारविधि' ग्रंथ साथ में अवश्य लावे। कीमती वस्तुएं न लावे।

-: भवदीय :-

डॉ.ब्रह्ममुनि(प्रधान)

उग्रसेन राठौर(कोषाध्यक्ष) माधव देशपांडे(मंत्री)

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य समाज, परली-वैजनाथ ४३१५१५ जि.बीड

शाहु जयन्ती दिवसपर विशेष(२६ जून २०१७)

छत्रपति शाहु महाराज का ऐतिहासिक भाषण ऋषि द्वारा स्वीकृत ईश्वरीय कार्य

अनुवादक - प्रा.वेदकुमार वेदालंकार(वेदमुनिजी)

प्रख्यात सुधारणावादी संस्थानिक एवं महर्षि दयानंद के अनुयायी राजर्षि शाहूजी महाराजने भावनगर(सौराष्ट्र-गुजरात) में दि.८ मार्च १९२० को आयोजित अखिल भारतीय आर्यधर्म परिषद में भाग लिया था। इस अवसरपर उन्होंने महर्षि दयानंद की विचारधारा का समर्थन करते हुए महत्वपूर्ण विचार व्यक्त किये थे। उनके द्वारा दिया गया वह हिंदी में अनूदित ऐतिहासिक मूलभाषण पाठकों की सेवा में प्रस्तुत है।-संपादक

ब्राह्मण्य का कैसा दुष्परिणाम हुआ है, इस तथ्य को आरंभ ही में स्पष्ट करते हुए राजर्षि कहते हैं ÷÷आज पराक्रम, विद्वत्ता, धर्मशीलता तथा उदारता आदि सद्गुणों का लोप हो गया है, फलस्वरूप बालविवाह, बहुविवाह, मद्यपान, स्त्रियों की शिक्षा पर पाबंदी, वर्णाश्रम धर्म की अव्यवस्था आदि अनेक समाजघातक रुढ़ियों ने समाज को निर्जीव कर डाला है। गुरु लोगों की कार्यवाहियाँ खूब फैल गई। ÷अष्टवर्षा भवेत् गौरी', इस अवैदिक पाठ का पठन शुरु होने के कारण देश की राष्ट्रीयता लगभग समाप्त हो गई है।" इस कर्मकांड का प्रभाव और उसके पंजे से सामान्य जनों को छुटकारा दिलाने के लिए जो प्रयत्न किये गये, उनका महत्व आंकते हुए और उसमें बच रहे अधूरेपन की ओर ध्यान दिलाते हुए राजर्षि कहते हैं ÷÷यद्यपि सत्यशोधक समाज आदि समाजों ने कुछ सुधार कार्य किया है, तथापि इन संस्थाओं से विशेष कुछ होनेवाला नहीं है, क्योंकि वे ÷शठं प्रति शाठ्यं' के सिद्धान्त के अनुसार कार्य कर रही हैं।" हाँ, आर्य समाज यह कार्य कर सकेगा, इसे स्पष्ट करते हुए वे कहते हैं, ÷देश को जागृत करने की महोषधि वैदिक धर्म ही है, क्योंकि हिन्दुस्तान के हृदय में वेदाभिमान बसा है और आर्य समाज वेदानुकूल रहने को ही धर्म समझता है।' आर्यसमाज का धर्म है - ÷÷सारे संसार का उपकार करना- आर्य समाज कुल सारे मानव समाज के लिए है।" इस आर्यसमाज का कार्य सारे देश में फैले, यह राजर्षि की आंतरिक इच्छा है, इसीलिए ÷÷लोगों का मानसिक दृष्टि से सुधार होना चाहिए। यह सुधार शिक्षा के द्वारा ही संभव है। इसलिए मैंने शिक्षा के सूत्र आर्य समाज के हाथ सौंप दिये हैं।" ऐसा राजर्षि ने कहा है।

मूल भाषण :-

सज्जनगण x आईए, हम तनिक भारतवर्ष के बीते इतिहास पर दृष्टि डालें। हजार वर्ष पूर्व के और आज के भारतवर्ष में आकाश-पाताल का अंतर आ गया है। आज पराक्रम, विद्वत्ता, धर्मशीलता, उदारता आदि सद्गुणों का लोप हो गया है। हजारों कुसंस्कारों, रीति-रुढ़ियों से ग्रस्त भारत को देखकर थोड़ा आश्चर्य तक भी नहीं होता है। बालविवाह, बहुविवाह, मद्यपान, स्त्री-शिक्षा पर पाबंदी, वर्णाश्रम धर्म की अव्यवस्था आदि अनेक घातक रुढ़ियों ने समाज को निर्जीव कर डाला है।

उदाहरणार्थ वर्णव्यवस्था को ही लीजिए। पूरे भारत में विशेषतः महाराष्ट्र आदि दक्षिणी प्रान्तों में ब्राह्मणेतर जातियों की दशा अत्यन्त शोचनीय है। इन जातियों को आगे बढ़ने का और अपनी प्रगति करने का अवसर ही नहीं दिया जाता। आज इस बीसवीं सदी में भी अस्पृश्य माने जानेवाले लोग हैं। उनका अपराध केवल इतना ही है कि उन्होंने एक विशेष जाति में जन्म नहीं लिया। आज भारतवर्ष में एकता, प्रेम और सहयोग कहीं देखने को नहीं मिलता। इसका कारण हमारी अपनी मूर्खता है। इसी भारतवर्ष में ऐसे

भी मनुष्य हैं कि जिन्हें अपने पर अपने ही भाई की छाया पडना भी असह्य लगता है। स्वयं ही अपने को उच्च माननेवाले लोग जाति के अभिमान के मद में सिर तक डूबे हैं और नीच कही जानेवाली जातियों पर मनमाना अत्याचार कर रहे हैं। मनुष्य को उसकी योग्यता के अनुसार उच्च या नीच वर्ण देना, यह वैदिक आदर्श था। मुनि जनों ने उपदेश दिया है कि,

÷धर्मचर्यया जघन्यो वर्णः

पूर्वपूर्ववर्णमापद्यते जातिपरिवृत्तौ ।

अधर्मचर्यया पूर्वो वर्णः

जघन्यजघन्यवर्णमापद्यते जातिपरिवृत्तौ।।

उसके स्थान पर पौराणिक लोगों ने ÷ब्राह्मणेन जातः ब्राह्मणः' ऐसी व्युत्पत्ति करके ब्राह्मण का जन्मवाचक अर्थ करना आरंभ कर दिया। मनचाहे ढंग से ग्रंथों की रचना करनी शुरू कर दी। ÷स्त्रीशूद्रौ नाधीयताम्' इसे तो मानों, वेदमंत्र कहकर ही कंठस्थ करा दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि स्त्रियों और शूद्रों के लिए ज्ञान का मार्ग ही बंद हो गया। बहुत अधिक काल तक यहीं दशा बनी रही, इसलिए शूद्र स्वयं को अछूत मानने लगे। फिर क्या था, ब्राह्मणों की बन आई और वे ब्राह्मणत्व का ठेका हथियाकर बैठ गये।

वास्तव में ब्राह्मण का जीवन पारमार्थिक जीवन है। जब से योग्यता के अनुसार उच्चता और नीचता की परख करना समाप्त हो गया, तब से नामधारक गुरुवर्ग का हर दिन दीवाली हो गया। उन्होंने लोगों को जन्म से लेकर मृत्यु तक तो लूटा ही, तर्पणादि के बहाने लूटा, परन्तु उसके बाद भी श्राद्ध आदि के बडे ढोंग रचाये।

सज्जनवृन्द × जब देश की नौका के कर्णधार ब्राह्मण स्वार्थी बन गये थे, उस समय ÷अष्टवर्षा भवेत् गौरी' का अवैदिक पाठ उच्च स्वर से किया जा रहा था और राष्ट्रीयता लगभग नष्ट हो गई थी। ऐसे आपातकालीन समय में इसी काठियावाड प्रांत में कि जहाँ आपकी यह परिषद हो रही है, उसी भावनगर के समीप के मोरवी गाँव में केवल स्वदेश की जागृति करने के लिए नहीं, बल्कि अखिल भूमंडल को जगाने के लिए महर्षि दयानंद का जन्म हुआ। उन्होंने तपश्चर्या की, वेदाध्ययन किया, भारत खंड की अवनत दशा का निरीक्षण किया और निःस्वार्थी बनकर भारत में भडक रही मत-मतांतरों की आग में उसे बुझाने हेतु कूद पडे। उन्होंने पथभ्रष्ट ऋषि-सन्तान को पुनः सन्मार्ग पर ला छोडा। चारों तरफ जागृति फैलाई। लोगों

ने उन्हें गालियाँ दीं, उन पर ईट-पत्थर बरसाये और उनका जितना बन सके उतना अपमान किया। परन्तु इस मान-अपमान की किंचित् भी परवाह न करते हुए वे महान् ऋषि, तपस्वी व त्यागी दयानन्द वैदिक धर्म का डंका बजाकर ही रहे। नाम भर के ब्राह्मण सिर से पैर तक सुलग उठे। उन्होंने ऋषि दयानंद की गति को रोकने के लिए पूरा जोर लगाया, परन्तु ईश्वर की प्रेरणा को रोकने की शक्ति भला कहीं किसी में है क्या? स्वामी जी ने केवल दस वर्षों में जो घनघोर गर्जना की, उससे पंजाब, संयुक्त प्रांत, राजपूताना, बंगाल, बिहार आदि राज्य हडबडाकर जाग उठे। लाखों लोग उनके अनुयायी बन गये। उत्तर भारत में ही नहीं, आज तो सम्पूर्ण भारत खंड में अवैदिक पाठ के स्थान पर ÷ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्' और ÷शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणो याति शूद्रताम्' यह वैदिक पाठ पढा जाने लगा।

आर्य समाज के कार्य से सारा संसार परिचित है। छूत-अछूत की काल्पनिक रुढि को तोडकर आर्य समाज ने युद्ध में भी बहुत सहायता की है। विदेश यात्रा के कारण मनुष्य को पतित माना जाता था, वही यात्रा अब वांछनीय मानी जाने

लगी है। आर्य धर्म कुल सारे मानव-समाज के लिए है। आनंद का विषय है कि अनेक यूरोपियन स्त्री-पुरुष भी आर्य-धर्म को स्वीकार कर रहे हैं। सच कहें तो लॉर्ड किचनेर, सर हेग, लॉर्ड फ्रेंच आदि की गणना पहले से ही आर्यों में की जा सकती है, क्योंकि इन योद्धाओं ने क्षत्रियोचित धर्म का परिपालन किया है। मेरे मतानुसार तो यही धर्म शासित-शास्ता को प्रेम-रज्जु से बाँधकर एकता लाने का प्रयत्न कर रहा है। मुझे पूरा भरोसा है कि आर्य धर्म विश्वव्यापक धर्म बनेगा। श्री प्रतापसिंह जी तथा श्री सज्जनसिंह जी आदि राजा इसी धर्म के अनुयायी हैं, यह बड़े गर्व का विषय है। हमें भी उन्हीं का अनुकरण करना चाहिए। यह भी बहुत सन्तोष की बात है कि यद्यपि स्वार्थी लोग आज भी इधर-उधर बड़े हाथ-पैर पटक रहे हैं, तथापि सच्चे ब्राह्मण और शिक्षित जन हमारे अनुकूल हैं। किन्तु दक्षिणी प्रान्त में भी बहुत-सा कर्तव्य पूरा करना शेष है। आर्यों का कर्तव्य है कि इस देश में भ्रातृ-भाव जागृत करें।

यद्यपि 'सत्यशोधक समाज' आदि समाजों ने कुछ सुधार कार्य किया है, तथापि इन संस्थाओं से विशेष कुछ होने वाला नहीं है, क्योंकि वे 'शठ' प्रति

'शाठ्यम्' के सिद्धान्त के अनुसार कार्य कर रही हैं। परन्तु देश को जागृत करने वाली महोषधि वैदिक धर्म ही है, क्योंकि प्रत्येक हिन्दू के हृदय में वेदों के प्रति अभिमान की भावना बसी है तथा आर्य समाज वेदानुकूल रहने को ही धर्म समझता है। सारे संसार का उपकार करना ही आर्य समाज का धर्म है।

सज्जनगण × अन्य धर्मों की अपेक्षा वैदिक धर्म का महत्व अधिक है, यही जानकर मैंने इस धर्म को स्वीकार किया है।

मैंने राजाराम कॉलेज, हाईस्कूल, गुरुकुल, अनाथालय, सरदार बोर्डिंग (छात्रावास) आदि सारी संस्थाएँ आर्य प्रसारक सभा, संयुक्त प्रांत को सौंप दी हैं। यह सुधार शिक्षा के द्वारा ही संभव है। इसलिए मैंने शिक्षा के सूत्र आर्य समाज के हाथों सौंप दिये हैं। मेरे लिए जो कुछ करना संभव था, मैंने कर दिया है। मेरी हार्दिक इच्छा है कि, मेरे जोतीबा, पंढरपुर आदि तीर्थक्षेत्रों में भी आप गुरुकुल, हाईस्कूल आदि स्थापित करें। मेरा जो कर्तव्य था, मैंने कर दिया। जब आगे का कर्तव्य आपका उत्तरदायित्व है। यदि इतना होने पर भी वैदिक धर्म का प्रसार नहीं हुआ, तो इसमें आर्य प्रसारक सभा

और आप ही दोषी होंगे । मेरी इच्छा है कि कुछ थोड़े सच्चे कर्मवीर मेरे पास आकर मुझे अपना समय दें ।

आर्य-भाइयों × अभी तक आपमें से कर्महीनता नष्ट नहीं हो पाई है । ऋषि की प्रेरणा शिक्षित समाज में दृष्टिगोचर हो रही है । देश की सभी समाजें, सभाएँ और संस्थाएँ वैदिक सिद्धान्तानुसार अपना कर्तव्य कर रही हैं। आर्य समाज ने 'यथेमां वाचं कल्याणी' इस वेद-आज्ञा के अनुसार गुरुकुल, अनाथालय, कॉलेज आदि संस्थाएँ खोलकर बिना किसी भेदभाव के सब जातियों में वेदवाणी का प्रचार किया है । फिर भी हम अभी तक ऋषि की तुलना में सौ में से एक प्रतिशत भी कर्मवीर नहीं बन सके हैं । यह समय अकर्मण्यता का नहीं है, कर्मण्यता की आवश्यकता है । उदाहरणार्थ पटेल बिल को ही लीजिए । हमें उसके अनुसार आचरण आरंभ करना चाहिए। हम लोग वेद-प्रतिपादित गुणकर्मानुसार वर्ण-व्यवस्था का पालन कर रहे हैं, अपने प्रत्यक्ष कार्य द्वारा यह सिद्ध कर दिखाने का समय अब आ पहुँचा है ।

मैंने आपका काफी समय लिया, किन्तु आपने ध्यानपूर्वक और उत्साह के साथ मेरा भाषण सुना, इसके लिए मैं पुनः

एक बार हृदय से आपका आभार मानता हूँ और अन्त में सबसे विनम्रतापूर्वक कहना चाहता हूँ कि ऋषि दयानंद के कार्य का यदि आपके हृदय पर प्रभाव पड़ा हो, तो कृपया स्मरण रखिए कि इसी काठियावाड की भूमि में बालक मूलशंकर ने कठोर प्रतिज्ञा करके गृहत्याग किया था तब आप लोग भी इस तीर्थ स्थान से वापस जाते समय घोर प्रतिज्ञा करें कि वैदिक सिद्धान्तों व विचारों के अनुसार आचरण करने में हम थोड़ी भी कमी न रहने देंगे। भाइयों, अन्त में सत्य की विजय निश्चित है, इस ध्यान में रखकर 'ऋषि द्वारा स्वीकृत ईश्वरीय कार्य' को फैलाने का यत्न कीजिए और काम में लग जाइये । परमात्मा आपको शक्ति देगा, क्योंकि कर्मवीरों का सहायक वही ईश्वर है ।

साभार-

डॉ.एस.एस.भोसले द्वारा सम्पादित
'क्रांतीचे अग्रदूत राजर्षी शाहू महाराज'
इस मूल मराठी ग्रन्थ से अनूदित

अनुवादक का पता-

इंद्रधनु वृद्धाश्रम, चौरस्ता, उमरगा
जि.उस्मानाबाद मो.९४२१९३३१५१

शुद्धि आन्दोलन और घर वापसी

- डॉ. ब्रह्ममुनि (प्रधान, म. आ. प्र. सभा)

परमात्मा ने जीवात्मा के पूर्ण कल्याण के लिए यह सृष्टि, सृष्टिक्रम, सृष्टि के नियम, न्यायव्यवस्था और वेद का ज्ञान प्रदान किया है। सृष्टि में जो कुछ भी है, वह सब कुछ वेदों में है और जो वेदों में है, वह सब सृष्टि में विद्यमान है। जीवात्मा यह साधक है और जड़ सृष्टि, शरीर आदि सभी साधन हैं। और इन सबका एकमेव साध्य है परमात्मा x

परमात्मा ने सृष्टिक्रम व निसर्ग में सभी साधन शुद्ध रखने की व्यवस्था की है। वेद का सत्यज्ञान आत्मा को इन साधनों को शुद्ध रखने, कार्यक्षम बनाने और उनका सदुपयोग करके आत्मकल्याण व मोक्ष(मुक्ति) प्राप्त करने के लिए आदेश व निर्देश यह उपदेश व संबोधन के रूप में किया है। आत्मकल्याण के साधन भी शुद्ध होने चाहिए और वेदज्ञान भी शुद्ध होना चाहिए। जैसे नदी का पानी दूर जाकर मलिन होता है, तब पानी उपयोग के लायक नहीं रहता, वैसे ही वेदरूपी ज्ञानगंगा कालान्तर में अशुद्ध हुई और अज्ञान, अंधविश्वास आदि सारे विश्व में फैलते गये। व्यक्तिपूजा, जड़पूजा, हिंसा

आदि की परम्परा शुरू हुई और जो कल्याण का रास्ता एक ही था, वह भी अनेकों अकल्याण के रास्तों में परिणत हुए। सत्यज्ञान भ्रष्ट हो गया। लोगों का आचरण भी भ्रष्ट होता गया। निसर्ग के नियमों का पालन नहीं हुआ। इसलिए मानवमात्र दुःखी व रोगी बन गया है। सुख, शांति और आनंद के लिए शुद्धि होनी आवश्यक है। निसर्ग की शुद्धि, शरीर की शुद्धि, मन की शुद्धि, चित्त की शुद्धि और सबसे महत्व की है-ज्ञान एवं आचरण की शुद्धि x

गुरु विरजानन्द दण्डी ने सबसे पहले म. दयानंद की शुद्धि की और पौराणिक ग्रन्थों व उनकी मान्यताओं को यमुना नदी में बहाकर उन्हें वेद का शाश्वत ज्ञान दिया। साथ ही वेदधर्म, ईश्वर, आत्मा व आत्मकल्याण इन सभी का सही रास्ता बता दिया। इन्हीं से मानवमात्र को सुख, शांति, आनंद व मोक्ष(मुक्ति) मिल सकती है, यह भी बताया। उन्होंने सही अर्थों में अध्यात्म का मार्ग प्रशस्त किया। शुद्धि के लिए जो संस्कार करने पड़ते हैं व वे भी बताये और गुरुदक्षिणा के रूप में दयानंद का समग्र जीवन लेकर उन्हें आदेश

दिया कि, 'दुःख के सागर में पड़े हुए मानवमात्र को वेद का सही मार्ग बताओं और सब पर दया करो।' तब शुद्ध हुए दयानंद ने वेद को माननेवाले पौराणिक लोगों की शुद्धि आरम्भ कर दी तथा उन्हें शुद्ध वैदिक (मानवता) धर्म में प्रविष्ट किया।

ऋषि दयानंद के मन्तव्यानुसार धर्मग्रंथ वेद एक ही है। सृष्टिनिर्माता, सबका पालन करनेवाला, संहार करनेवाला, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, परमेश्वर भी एक ही है, जो कि निराकार व निर्विकार है। और धर्म भी एक ही वैदिक धर्म जो आत्मा को प्रिय है। सृष्टि के नियम व परमेश्वर के आदेश का पालन करना यही सब प्रकार के सुख, शांति व आनंद का मार्ग है। तथा मानव की जाति भी एक ही है। इस तरह वेद के आधार पर सत्यधर्म, जो कि सार्वभौम व एक है। वह सर्वकालीन व सार्वजनिक भी है। यही सिद्धान्त महर्षि ने दुनिया को बता दिये और इन विचारों व आचरण के आधार पर पौराणिकों की भी शुद्धि की।

पहली शुद्धि पौराणिकों की हुई और उनको श्रेष्ठ (आर्य) बनाने हेतु सन् १८७५ में 'आर्यसमाज' की स्थापना की। आगे भी ऋषि का काम चलते रहा। आर्य समाज के माध्यम से वैदिक विचारों के

प्रसार का तथा मानवजाति के उत्थान का कार्य बढ़ता रहा। शास्त्रार्थ होते रहे, चर्चाएँ व शंकासमाधान भी होते गये तथा शुद्धिकरण का काम भी बढ़ने लगा। स्वामीजी के शुद्धी का आधार मानवमात्र था और वेद व वैदिक सिद्धान्त थे। वे सभी पक्षपातरहित थे। इसीलिए उनके सामने पंथवाद, जातिवाद, अज्ञान, अंधविश्वास आदि कुरीतियों से समाज को मुक्त करके उसे सत्यज्ञान, वेदप्रतिपादित ज्ञान, मानवजाति, आत्मकल्याण का मार्ग बताना व उसे स्वीकार करवाना यही था। वेदज्ञान सूर्य के समान सारे मानवमात्र के लिए है, यह स्वामीजी बताते रहें। इसलिए उनके सामने मनुष्यकृत मत-पंथ व जातिभेद को कुछ भी स्थान नहीं था।

महर्षि दयानंद के पश्चात् उनके शिष्यों ने जो भी शुद्धिकरण का कार्य किया, वह हिन्दुओं के लिए आर्य समाज के माध्यम से प्रचार करके किये। जड़पूजा, कर्मकांड, जातिवाद, दुराचार, दुर्व्यसन आदि बुराईयों से मुक्त करके किये। उसके साथ-साथ बाकी पंथों के लोगों का भी शुद्धिकरण किया। आर्यसमाज के शुद्धिकरण का उद्देश्य भी म.दयानंद के अनुसार ही था। इसलिए मुसलमान, ख्रिश्चन, जैन, बौद्ध आदियों

ने शुद्धिकरण में भाग लिया और वे शुद्ध सनातन वैदिक धर्म में प्रविष्ट हुए। ये सब लोग केवल वेद को माननेवाले थे। वे पौराणिक हिंदू धर्म, उसके तत्त्वज्ञान व उसके आचरण को देखकर वैदिक धर्म में नहीं आये।

सत्य की जिज्ञासा रखनेवाले तथा सत्याचरण की आवश्यकता को अनुभव करनेवाले सभ मतों के लोगों ने सभी पंथों से अलग 'वैदिक सत्यधर्म' को स्वीकार किया और वे सत्य सनातन वैदिक धर्म में प्रविष्ट हुए। उन्होंने आर्य समाज के माध्यम से शुद्धिकरण कर लिया। वे हिन्दू धर्म में प्रविष्ट नहीं हुए। उन लोगों ने वैदिक धर्म की सार्वभौमिकता, सार्वकालिकता, सार्वजनिकता, सर्वकल्याणकारिता आदि बातें वेदज्ञान में देखी। उन्होंने आत्मकल्याण के मार्ग देखा, परखा और वे शुद्ध हुए। विद्वान् बनकर वे वैदिक धर्म का प्रचार करने लगे, 'हिन्दू धर्म' का नहीं।

आर्य समाज के शुद्धिकरण को हिन्दुओं का पहले से विरोध रहा है। यहाँ बाहर जाने के लिए अनुमति है, किन्तु अन्दर आने की अनुमति नहीं। जातिवाद, ईश्वरवाद, छूत-अछूत, अन्याय, अत्याचार, अज्ञान अंधविश्वास आदि के कारण अनेकों हिन्दू लोग बाहर गये,

किन्तु उन्हें पुनश्च वापस लाने का कार्यक्रम हिन्दुओं ने नहीं बनाया। इससे देश में अनेक मत व पंथ बढ़ते गये। आत्महत्याएं हुई, अनेकों को मार डाला गया.... आज भी यह बड़े पैमाने पर हो रहा है। कुल की प्रतिष्ठा का झूठा अभिमान इन लोगों में है। तथाकथित धर्मगुरुओं में भी बड़ा अभिमान है। अकबर-बिरबल की कथा में भी आता है कि किसी का शुद्धिकरण नहीं हो सकता। बंगाल के काला पहाड़ की कहानी भी प्रसिद्ध है। अनेकों प्रेमी युवक-युवतियों ने उनकी शुद्धि न होने से आत्महत्याएँ की हैं। इसीलिए शुद्धिकरण तथा शुद्धि आन्दोलन का श्रेय केवल 'आर्यसमाज' व वैदिक धर्मी आर्यजनों को ही जाता है।

***हिन्दू 'शुद्धि' क्यों नहीं कर सकता?**

हिन्दू के पास अनेक मत-पंथ, अनेकों देवी-देवता, विविध उपासना पद्धतियाँ, अनेकों जातियाँ, अनेकों चढ़ावें, अनेकों स्मशानभूमियाँ, अनेकों मंदिर, अनेकों गुरु, अलग-अलग गुरुमंत्र, अनेकों पुजारी तथा उनमें भी अलग-अलग गुरु हैं। इस प्रकार की खिचड़ी एक दूसरे के विरुद्ध है। दलितों को मंदिर प्रवेश नहीं, रोटी-बेटी व्यवहार

भी एक-दूसरे के साथ जमता नहीं। हिन्दू की ऐसी विचित्र अवस्था है। इनके पास कोई गैरहिन्दू ÷ हिन्दू होना चाहता है' तो उसके लिए व्यवस्था नहीं है। यदि कोई अन्य पन्थी हिन्दू मत में आना चाहता है, तो उन्हें हिन्दू गुरु लोग निम्नलिखित कौन-सी व्यवस्था दे सकते हैं? आप उन्हें....

- * कौनसे देवी-देवताओं की पूजा करने को कहेंगे ?
- * कौनसे मंदिर में जाने को कहेंगे ?
- * कौनसी उपासना(पूजा) करने को लगायेंगे ?
- * उनका पुजारी कौनसा होगा ?
- * उनका गुरु कौन होगा ?
- * गुरुमंत्र कौनसा रहेगा ?
- * जाति कौनसी बतायेंगे ?
- * कौनसा धर्मग्रंथ बताओगे ?
- * उन्हें कौनसी स्मशानभूमि दोगे ?
- * उनकी अंत्यविधि किस प्रकार की होगी ?
- * शूद्र हुए बच्चे-बच्चियों के विवाह किन के साथ और किस पद्धति से होंगें ?
- * इनमें उच्च कौन तथा नीच कौन होगा, उन्हें किसमें बिठाओगे ?

ऐसी एक नहीं अनेकों समस्याएँ हैं, जिनका उत्तर हिन्दू ठेकेदारों के पास नहीं है। इसलिए आर्यसमाज के माध्यम से शुद्ध हुए मुसलमान, ख्रिश्चन, बौद्ध

आदियों की समस्याएँ केवल और केवल मात्र सत्य सनातन वैदिक धर्म के अनुसार आर्यसमाजी लोगों ने ही दूर की है। आर्यसमाजियों ने अपनी बच्चियाँ उन्हें दी और उनकी बच्चियाँ अपने बच्चों से ब्याह दी। एक ईश्वर, एक धर्मग्रन्थ, एक जाति, एक उपासना पद्धति, एक अंत्यविधि तथा एकही अग्निहोत्र व पंच महायज्ञ आदि के मार्ग पर आर्य समाज ने उन्हें लाया। साथ ही एक ही अध्यात्म मार्ग- योग भी बताया। इन सभी श्रेष्ठ बातों को देखकर ही कई विद्वान मुस्लिम वा ख्रिश्चन पंथ में से आर्यसमाज में प्रविष्ट हुए, यह विशेष बात है। इस विषय में आर्यसमाज और पौराणिक इन दोनों का भेद न बताते हुए शुद्धिकरण से हिन्दू हो गये, यह बताना एक भ्रम है। इसी भ्रम के कारण दुनिया में दयानन्द और आर्यसमाज ने भी हिन्दुओं के लिए ही शुद्धि आन्दोलन किया, ऐसा कहना गलत होगा।

इससे आर्य विद्वान् व आर्यसमाज में भी हिन्दुत्ववादी हैं, संकीर्ण हैं और गैरहिन्दू विरोधी है, ऐसी धारणा बन जाएगी। इस तरह के विचारों से महर्षि दयानन्द व आर्यसमाज के साथ भी कृतघ्नता होगी और फिर दुनिया से सत्य सनातन वैदिक धर्म लुप्त हो जायेगा।

छत्रपति शिवाजी महाराज ने शुद्धि की, पर उनका आधार महर्षि दयानंद का शाश्वत सत्यज्ञान-वेद का नहीं था। उनका आधार हिन्दू-मुसलमान ही था। इसलिए उनके शुद्धिकरण को भी तथाकथित हिन्दू धर्म मार्तण्डों ने स्वीकृति दी नहीं। शुद्ध हुए गैरहिन्दू लोगों के बच्चे-बच्चियों के प्रश्न नहीं छुड़ाये। फिर से वे और भटकते रहे। महर्षि दयानंद जैसे महापुरुष के कारण तथा उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज द्वारा इतनी शुद्धियाँ, इतना साहित्य सृजन होने पर भी हिन्दू समाज के धर्मगुरुओं व धर्ममार्तण्डों ने इससे कुछ भी सबक नहीं सिखा। इसलिए डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर को भी हिन्दू धर्म त्यागकर बौद्ध धर्म (मत) स्वीकारना पड़ा। वेद का ज्ञान माननेवाले बिघड़े हुए हिन्दू पंथ ने ही दुनिया के सभी मत-पंथ निर्माण किये हैं, किन्तु उन्हें पश्चाताप नहीं होता और 'आज हमारी संख्या कम हुई ऐसा कह रहे है।' किसी मुसलमान ने हिन्दू स्त्री को अपनी पत्नी बनाकर रखा, तो उस हिन्दू महिला के बच्चे मुसलमान ही माने जाते हैं। इसके विपरीत किसी हिन्दू ने मुसलमान स्त्री को पत्नी के रूप में रखा तो उसके बच्चे भी मुसलमान ही समझे जाते हैं। ऐसा है हिन्दू का अन्य पंथों के साथ व्यवहार? अतः घर वापसी का आधार

दयानन्द का अलग और हिन्दुओं का अलग।

यह विश्व एक घर है, मानवजाति भी घर है तथा सत्य सनातनी वैदिक धर्म यह भी घर ही है। एक ईश्वर, एक धर्मग्रंथ-वेद, एक धर्म-वैदिक मानवधर्म, एक जाति-मानवजाति, एक मार्ग-अध्यात्म-योग' मार्ग है। जो-जो वैदिक धर्म रूपी घर को छोड़कर असत्य, अज्ञान, अंधविश्वास आदि में पड़े है, उन सभी पंथ व मतवाले यथा-हिन्दू, मुस्लिम, बौद्ध, जैन, ख्रिश्चन, पारसी, चार्वाक, भौतिकवादी, अध्यात्मवादी, नास्तिक, आस्तिक आदियों को सत्य वैदिक धर्म में प्रवेश करना ही सही अर्थों में घरवापसी है, जो कि सार्वभौम, सार्वत्रिक व सर्वकालिक है। अतः अविद्या-अन्धकार व कुरीतियों से ग्रस्त हिन्दूसहित अन्य सभी मनुष्यकृत मत-पन्थों व उनके जातियों की सही घरवापसी 'विशुद्ध वैदिक धर्म में प्रविष्ट होना' ही है। अज्ञान व अन्धविश्वासों से ग्रस्त हिन्दू मत में आना न तो शुद्धि हो सकती है और न ही घरवापसी × इसलिए शुद्धि आन्दोलन व घर वापसी के मुद्दे को यथार्थ ढंग से समझना ही बुद्धिमत्ता है।

- आर्यसमाज, परली-वै. जि. बीड



महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
स्व.प्रो.डॉ.धर्मवीर आचार्य की पावन स्मृति में
कृतज्ञता गौरव स्थिरनिधि
आर्थिक सहयोग हेतु प्रकट आवाहन



प्रिय धर्मप्रेमी व राष्ट्रप्रेमी सज्जनों...×

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित 'परोपकारिणी सभा' के नवनिर्माण में तथा आर्यसमाज व वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार व प्रसार में अपना सर्वस्व न्योछावर करनेवाले आर्य जगत् शीर्षस्थ तपस्वी विद्वान व महाराष्ट्र के भूमिपुत्र प्रो.डॉ.धर्मवीरजी आचार्य (अजमेर) दि.६ नवम्बर २०१६ को हम सभी को छोड़कर अचानक संसार से चल बसे। इस दुखद घटना से सारा आर्य जगत् शोकविह्वल हो उठा। हम सबकी अपूरणीय क्षति हो गयी है।

डॉ.धर्मवीरजी आर्य जगत् के शान व सम्मान थे। उन्हीं के कारण परोपकारिणी को नवजीवन मिला है। इस सभा का उन्होंने कायापालट किया और समग्र विश्व में इसकी शान, मान, प्रतिष्ठा व गौरव को बढ़ाया। इस सभा की मासिक पत्रिका 'परोपकारी' का प्रकाशन सामान्य रूप में चल रहा था, किन्तु धर्मवीरजी के कारण यह मासिक पत्रिका सर्वाधिक प्रगति पर रही। इस मासिक को पाक्षिक का रूप देकर इसे आर्य सिद्धान्तों का प्रतिपादन व रक्षण करनेवाली पत्रिका बना दिया। प्रारम्भ में हजार-बारह सौ की प्रतियों की संख्या में छपनेवाली यह पत्रिका आजकल बीस हजार के लगभग छप रही है। इसका सारा श्रेय डॉ.धर्मवीरजी को ही जाता है। सभा के भवन बांधकाम भी अधिक बढ़ते रहे। कर्मठ आर्य व्यक्तित्व श्री गजानंदजी आर्य के नेतृत्व में डॉ.धर्मवीरजी 'प्रधान' तथा ओममुनिजी 'मंत्री' बनकर इन्होंने सभा को सर्वाधिक उन्नत बनाया।

प्रो.डॉ.धर्मवीरजी ने परोपकारिणी सभा के साथ देश, विदेश के विद्वानों त्यागी, तपस्वी, कार्यकर्ताओं, वानप्रस्थी, संन्यासी, नैष्ठिक ब्रह्मचारी, योगीजनों तथा सामान्य कार्यकर्ताओं भी इस सभा के साथ जोड़ा। ऋषि उद्यान में आर्ष गुरुकुल गौशाला, यज्ञशाला, अतिथि भवन, पुस्तक प्रकाशन, योग शिविर, संस्कृत प्रचार, आर्यवीर दल आदि गतिविधियाँ बढ़ाई। साथ ही आश्रम में विशाल पाकशाला व भोजनालय विभाग भी खड़े किये। बाहर से आये हुए अतिथियों का स्वागत-सम्मान व सेवा आज भी बड़े पैमाने पर होती है। यह सब डॉ.धर्मवीरजी के कारण ही हुआ।

डॉ.धर्मवीरजी प्रख्यात आर्य पत्रकार, कुशल सम्पादक व वेदमंत्र पर सुंदर विवेचना करनेवाले लेखक भी रहे। परोपकारी पत्रिका में डॉ.धर्मवीरजी के छपनेवाले सम्पादकीय अग्रलेख आर्यजनों के लिए ऊर्जा का स्थान बने रहें। देश व विदेश में घटनेवाली अवैदिक, अनैतिक व सदोष घटनाओं पर बड़ी निर्भीकता के साथ उन्होंने लेखनी चलायी। वैदिक सिद्धान्तों की कसौटी पर उन्होंने तर्क के साथ अवैदिक विचारों का खण्डन किया। कोई भी राजनैतिक नेता हो या विद्वान, पौराणिक हो या अन्य मतवादी × डंके की चोट के साथ उन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से सटीक उत्तर दिया।

डॉ.धर्मवीरजी कभी किसी कार्यक्रम में दक्षिणा माँगते नहीं थे, जो भी मिला उसे प्रसाद समझकर अपने जेब में न डालते हुए 'परोपकारिणी सभा' में जमा करते थे। उन्होंने स्वयं का वैयक्तिक जीवन (प्रायव्हेट लाईफ) रखा ही नहीं, इसे सामाजिक रूप प्रदान किया। डॉ.धर्मवीरजी को नोकरी के बाद पेन्शन तक नहीं थी, न किसी प्रकार की विमा पॉलीसी× इन स्थितियों में भी वे अपना पारिवारिक जीवन बिताते रहें। भविष्य का क्या होगा, कैसे होगा ? इस पर चिन्ता न करते हुए ईश्वर के भरोसे पर सबकुछ छोड़ दिया। 'ईश्वर जो करेगा, वह ठीक ही होगा,' ऐसा दृढ़ निश्चय करते हुए निःस्वार्थ, निर्लेप, त्यागमय व सन्यस्तवृत्ति का जीवन जीते रहे। इतना होते हुए भी उन्होंने कभी अपनी विद्वत्ता, ज्ञान व कार्य पर गर्व नहीं किया। अपनी प्रसिद्धी के प्रभाव का उपयोग स्वयं के भाई, बहन, भावज व उनके परिवार के लिए भी नहीं किया। इनके लिए किसी से कुछ माँगा नहीं, न ही दिलवाया और न ही किसीसे सिफारीशें की। आज भी ये भाई-बहन व रिश्तेदार व उनके परिवार आर्थिक दृष्टि से सामान्य जीवन जीते हैं। कितना बड़ा यह आदर्श है ?

डॉ.धर्मवीरजी का समग्र जीवन एक प्रकार से यज्ञ की जलती समिधा रहा है। उनका करुण अंत भी महर्षि दयानन्द, वेद, आर्य समाज व परोपकारिणी सभा के प्रचार व प्रसार कार्य में ही हुआ। उनकी यह मृत्यु नहीं, बल्कि बलिदान ही है। उनके अकस्मात् देहावसान से आर्य जगत् को बहुत गहरा आघात पहुँचा है। सारा आर्य संसार उनके इस बलिदान से शोकविह्वल है।

सभा प्रधान डॉ.ब्रह्ममुनि ने परोपकारिणी सभा के मन्त्री श्री ओममुनिजी से चलभाष पर और लिखित पत्र द्वारा एक प्रस्ताव भेजा था। उसमें यह कहा था कि, 'डॉ.धर्मवीरजी के त्याग, तप, निःस्वार्थ सेवा व उनकी कर्मठता को देखकर उनकी धर्मपत्नी श्रीमती ज्योत्स्नाजी को हरमाह कुछ न कुछ धन मिलना चाहिए। ऐसी व्यवस्था स्थिरनिधि के माध्यम से होनी चाहिए। परोपकारिणी सभा ने इस प्रस्ताव को स्वीकार किया और हमें आश्वस्त करते हुए कहा कि, श्रीमती ज्योत्स्ना बहनजी की

सारी व्यवस्था की जिम्मेदारी परोपकारिणी सभा उठायेगी। उन्होंने डॉ.धर्मवीरजी के स्मृति में १ करोड़ रुपयों की स्थिरनिधि स्थापन करने का निर्णय लिया। हमने इस पर अपना विचार व्यक्त किया। जो कि, निम्न मुद्दों के माध्यम से अभिव्यक्त है।

१) श्रीमती ज्योत्स्नाजी को डॉ.धर्मवीरजी के स्थान पर परोपकारिणी सभा में सदस्या रूप में स्थान देने के निर्णय से सभा द्वारा व्यक्तिगत खर्च के लिए सभा से धन लेना उचित नहीं होगा।

२) अब तक परोपकारिणी सभा ने ऐसा प्रावधान किसी के लिए नहीं किया था।

३) आगे भी ऐसा करना उचित नहीं होगा।

४) यह गलत परम्परा म.दयानंद द्वारा स्थापित परोपकारिणी सभा में नहीं होनी चाहिए।

५) आखिर संस्था के लोग आगे क्या सोचेंगे? इसका कोई पता नहीं। आज जो सहानुभूति श्रीमती ज्योत्स्नाजी को मिल रही है, उसकी भविष्य में सम्भावना हो सकेगी क्या?

६) श्रीमती ज्योत्स्नाजी को भी व्यक्तिगत खर्च के लिए हर हमेशा सभा से पैसे माँगना उचित नहीं होगा।

७) औषधी, कन्याओं व दामाद का आदरातिथ्य व उनके भावी परिवार का व्यवस्थापन सार्वजनिक कामों में से दान लेना उचित नहीं होगा। ऐसे समय में उनके पास स्वयं का धन रहता हो तो अच्छा होगा।

इन सभी बातों पर विचार कर महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा ने मुदखेड (जि.नांदेड) में दि.०३.०१.२०१७ को आयोजित अन्तरंग बैठक में सर्वसम्मति से प्रो.डॉ.धर्मवीरजी आचार्य की स्मृति में स्वतंत्र स्थिरनिधि स्थापित करने का निर्णय लिया है, जिसके उद्देश्य निम्न रूप से हैं-

१) स्व.प्रो.डॉ.धर्मवीरजी की स्मृति को चिरस्थायी (कायम) बनाना।

२) डॉ.धर्मवीरजी ने सम्पूर्ण आर्य जगत्, महाराष्ट्र व विश्वभर के लिए जो काम किया, उसके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना।

३) डॉ.धर्मवीरजी के कार्य को अखंड रूप से आगे भी चलाते रहना।

४) महर्षि दयानंद द्वारा स्थापित 'परोपकारिणी सभा' को कायमस्वरूप में कुछ सहयोग राशि महाराष्ट्र से देते रहना।

५) महाराष्ट्र की एक तपस्विनी पुत्रवधू(बहु) आज विधवा बन गयी है, तो उनके प्रति महाराष्ट्र का कर्तव्यभाव व कृतज्ञता को बनाये रखना।

स्व.डॉ.धर्मवीरजी आचार्य की स्मृतिस्मारक कृतज्ञता गौरव स्थिरनिधी सशर्त परोपकारिणी सभा अजमेर में महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से स्थापित होगी, जिसका ब्याज सिधे श्रीमती ज्योत्स्ना 'धर्मवीर' के बैंक खाते में जमा होते रहेगा।

*** इस स्मृतिस्मारक कृतज्ञता गौरव स्थिरनिधि की शर्तें -**

- १) स्थिर निधि स्थापन करनेवाली संस्था का नाम- महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
- २) स्थिर निधि का नाम- ÷परोपकारिणी सभांतर्गत स्व.प्रो.डॉ.धर्मवीरजी आचार्य (चाकुर, उदगीर-महाराष्ट्र) अजमेर स्मृति स्मारक कृतज्ञता गौरव स्थिरनिधि।
- ३) स्थिर निधि का मूलधन - रु.११,००,०००/- (रु.ग्यारह लाख)
- ४) इसका मूल धन कोई भी, कभी भी, सभा के प्रस्ताव से भी निकाला नहीं जायेगा। इस राशि से कोई कर्जा तक नहीं उठा सकेगा।
- ५) इस स्थिरनिधि का केवल नूतनीकरण होता रहेगा ।
- ६) यह स्मारक स्थिर निधि राष्ट्रीयकृत बैंक में होगी ।
- ७) इस स्थिर निधि का मासिक/वार्षिक ब्याज सीधे श्रीमती ज्योत्स्ना ÷धर्मवीरजी' आचार्य के बैंक में उनके खाते में जमा होता रहेगा । (जब तक वे जीवित रहे....।)
- ८) इस निधि का ब्याज श्रीमती ज्योत्स्नाजी के पश्चात् परोपकारिणी सभा के खाते में जमा होते रहेगा ।
- ९) परोपकारिणी सभा भी इस स्थिरनिधि के ब्याज का सदुपयोग अ) गुरुकुल संचालन ब) अतिथि यज्ञ क) यज्ञ ड) गौशाला ई) विद्वानों व साधु-सन्यासियों की सहाय्यता व पुरस्कार/गौरव वितरण के लिए ही करते रहेगी ।
- १०) इस स्थिरनिधि के ब्याज का उपयोग किस कार्य में हो गया, इसका वार्षिक विवरण महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा को भेजना ।
- ११) किसी कारणवश परोपकारिणी सभा असमर्थ हो गयी या विस्थापित हो गयी, तो इसकी अंतिम स्वामिनी ÷महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा' और 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' होगी ।

इन सभी उद्देश्यों और शर्तों के साथ सभा के पदाधिकारियों व अन्तरंग सदस्यों ने 'स्व.प्रो.डॉ.धर्मवीरजी स्मृति स्मारक कृतज्ञता गौरव स्थिर निधि' स्थापन करने का निश्चय किया। अतः सभी आर्य जन इस निधि को पूर्णत्व प्रदान करने में दिल खोलकर सहयोग दे और इस कार्य को बढ़ावे ।

सभी की सम्मति से सभामंत्री श्री माधवराव देशपांडे को स्थिर निधि समिती का अध्यक्ष बनाया गया । संयोजक श्री लखमसीभाई वेलानी व कोषाध्यक्ष श्री उग्रसेनजी राठौर रहेंगे । सदस्यों में डॉ.ब्रह्ममुनिजी, डॉ.बाबुरावजी म्हेत्रे तथा आर्य जगत् व महाराष्ट्र के आर्यजन तथा डॉ.धर्मवीरजी से प्रेम व स्नेह रखनेवाले वेदानुयायी होंगे ।

अतः सभी आर्य सज्जनों व डॉ.धर्मवीरजी के स्नेही व मित्रजनों से निवेदन है कि, आप सभी 'स्व.प्रो.डॉ.धर्मवीरजी के स्मृति' में कृतज्ञता व्यक्त करने हेतू तथा अपनी

ही विधवा कन्या व बहु के बारे में कर्तव्य निभाने हेतु तथा महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित उत्तराधिकारिणी 'परोपकारिणी सभा' को सहयोग देने की पुण्य भावना के साथ प्रामाणिक रूप से इस स्थिर निधि में अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग देने की कृपा करें।

सभा का दिया हुआ दान ८० जी. के अनुसार आयकर से मुक्त है।

आप द्वारा दी जानेवाली निधियाँ महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम पर चेक या ड्राफ्ट द्वारा भेजें अथवा सभा के भारतीय स्टेट बैंक के खाता क्र.11154152843 - IFSC Code :SBIN0003406 पर जमा करें और उसकी सूचना सभा को दें।

- सहयोग के आकांक्षी भवदीय -

माधव के. देशपांडे

अध्यक्ष

लखमसीभाई वेलानी

संयोजक

उग्रसेन राठौर

कोषाध्यक्ष

स्व.प्रो.डॉ.धर्मवीरजी आचार्य स्मृति कृतज्ञता गौरव स्थिरनिधि समिति

डॉ.ब्रह्ममुनि

प्रधान

माधव के. देशपांडे

मंत्री

उग्रसेन राठौर

कोषाध्यक्ष

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य समाज, परली-वैजनाथ एवं

सर्वश्री डॉ.बी.एम. म्हेत्रे व पं.प्रियदत्त शास्त्री(हैदराबाद), दयाराम बसैये(सम्भाजीनगर), राजेंद्र दिवे व ज्ञानकुमार आर्य(लातूर), अर्जुनराव सोमवंशी (उदगीर), शंकरराव विराजदार(सोलापूर), डॉ.नयनकुमार आचार्य(परली-वैजनाथ), योगमुनि (धुलिया), सुरेश चिंतावार (धर्माबाद), विजय उनग्रतवार(देगलूर) आदि।

स्व.प्रो.डॉ.धर्मवीरजी आचार्य स्मृति स्मारक कृतज्ञता गौरव स्थिरनिधि समिति

जयदेव आर्य द्वारा लातूर में अतिथि भवन का निर्माण

प्रसिद्ध दानशूर उद्योजक एवं आर्य परिवार के सदस्य श्री जयदेवजी आर्य (पुणे)ने अपने परिवार के सौजन्य से आर्य समाज रामनगर, लातूर में २ लाख रुपयों की लागत से अतिथि भवन का निर्माण किया है। इस आर्य समाज में विद्वान् अतिथियों के निवास की असुविधा थी। इस आवश्यकता को समझते हुए श्री आर्यजी ने उदारता का परिचय देते हुए यह अतिथि भवन बनवाया, जिसमें दो कमरे एवं शौचालय व स्नानागार की व्यवस्था है। श्री जयदेवजी... आर्य समाज के दिवंगत पुरोहित व आयुर्वेद के तज्ज्ञ चिकित्सक स्व.पं.श्री महादेवजी शास्त्री के सुपुत्र हैं। इस प्रशंसनीय कार्य हेतु श्री आर्य जी का सभा व आर्यसमाज द्वारा दि.३० मई को राज्यस्तरीय बैठक में अभिनंदन किया गया।

सभा समाचार

आर्यसेवक गौरव स्थिर निधी २०१७

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा इस वर्ष दि.१५ मार्च २०१७ को लातूर के गांधी चौक, आर्य समाज में १९ आर्य विभूतियों का गौरव किया गया। जिनमें प्रसिद्ध शिक्षाविद्, लेखक, अनुवादक, प्राचार्य, सामाजिक कार्यकर्ता, उपदेशक, गुरुकुल की स्नातिकाएँ, स्वतन्त्रता सेनानी एवं आदर्श व्यक्तियों का समावेश था। इस गौरव समारोह में कई गौरव मूर्तियों के सम्मान में तथा उनकी स्मृतियों में धनराशियाँ भी संकलित कर उन्हें प्रदान की गयी, जिनका उद्देश्य सभा में वेदप्रचार हेतु स्थिरनिधियों का गठन करना है। जिनकी गौरवराशियाँ प्राप्त हुई, वे आर्यसेवक एवं आर्य सेविकाएँ निम्न प्रकार से हैं -

१) श्री गोविंदरावजी बंडेवार(तामसा)	-	१,००,०००/-
२) प्रो.डॉ.(स्व.) चंद्रभानूजी सोनवणे(लातूर)	-	५१,०००/-
३) श्रीमती मीरादेवी चं.सोनवणे(लातूर)	-	५१,०००/-
४) सौ.(स्व.)सुलोचनादेवी ज.वाघमारे(लातूर)	-	५१,०००/-
५)स्वा.सै.(स्व.) वासुदेवरावजी होळीकर(पानचिंचोली)-	-	५१,०००/-
६) श्रीमती रुक्मिणीदेवी होळीकर(पानचिंचोली)	-	५१,०००/-
७) प्रो.डॉ.(स्व.) कुशलदेवजी शास्त्री(नान्देड)	-	५१,०००/-
८) स्व.दि.लिं.होळीकर(उदगीर)	-	५१,०००/-
९)श्रीमती सुभद्राबाई दि.होळीकर (उदगीर)	-	५१,०००/-
१०)स्व.सुशीलाबाई निवृत्तीराव होळीकर(लातूर)	-	५१,०००/-

इन सभी आर्य विभूतियों की स्मृति व सम्मान राशियों की स्थिर निधियाँ बनाकर उनके ब्याज से पूरे महाराष्ट्र राज्य में वैदिक धर्म का प्रचार व प्रसार किया जाएगा। सभी दानदाताओं के प्रान्तीय सभाद्वारा हार्दिक धन्यवाद ×

सत्येन्द्रसिंहजी आर्य नहीं रहे



आर्य जगत् के कर्मठ वैदिक विद्वान् व परोपकारिणी सभा के सदस्य श्री सत्येन्द्रसिंहजी आर्य का दि.२९ मार्च २०१७ का बेंगलोर में निधन हो गया। गत ६-७ महिनो से वे बीमार चल रहे थे।

मेरठ निवासी श्री सत्येन्द्रसिंहजी बचपन से ही आर्य विचारों में पलते रहें। पढाई के पश्चात आरम्भिक दिनों में आप अंग्रेजी के प्राध्यापक रहें। पश्चात भारतीय स्टेट बैंक के विभिन्न उंचे पदों पर रहकर प्रामाणिकता के साथ सेवाएं देते रहें। उनका स्वाध्याय व चिन्तन बहुत ही गजब का था। मितभाषिता, सात्विकता व सरलता के धनी श्री सत्येन्द्रसिंहजी लेखक, सम्पादक, व्याख्याता व संशोधक रहें। उनका निजी विशालकाय ग्रन्थालय एक तरह से अनुसन्धाताओं के लिए सहाय्यक केन्द्र बन गया था। सेवानिवृत्त होने के पश्चात् वे परोपकारिणी सभा से जुड गये। परोपकारी पाक्षिक व वैदिक पथ मासिक के प्रकाशन कार्य में आपका काफी सहयोग रहा। निरन्तर आप आर्य समाज के प्रचार व प्रसार में सर्वतोमना निरीह भाव से संलग्न रहें। ऋषि उद्यान अजमेर में

साधना करते हुए वे आश्रमवासियों को अपने ज्ञान व अनुभवों से प्रवचनों द्वारा लाभान्वित कराते रहे। सभा को केन्द्र बनाकर आपने स्थान-स्थान पर प्रचारयात्राएं की। वर्ष २०१५ में जब महाराष्ट्र सभावालों ने आपको श्रावणी वेदप्रचार के लिए आमन्त्रित किया, तब आप हमारे आग्रह पर अनेकों कष्टों व विघ्नबाधाओं को सहते हुए महाराष्ट्र पहुँचे। एक माह तक सम्भाजीनगर(औरंगाबाद), परली-वैजनाथ, लातूर व सोलापूर में अपनी विद्वत्तापूर्ण वाणी से यहां के श्रोताओं को उपदेशामृत का पान कराया। यहां के स्कूल व कालेजों में भी आपके व्याख्यान हुए। विनम्रता व ऋजुता के व्यवहार द्वारा उन्होंने महाराष्ट्र के आर्यों पर विशेष छाप छोडी थी। ऐसे तपस्वी विद्वान् के चले जाने से आर्य जगत का काफी नुकसान हुआ है। प्रो.जिज्ञासुजी के शब्दों में 'श्री सत्येन्द्रसिंहजी एक ऊहावान ऋषिभक्त थे।' इन्हीं के प्रेरणा से जिज्ञासुजी 'ऋग्वेद-सत्यार्थ प्रकाश के आलोक में' यह ग्रन्थ लिख पाये।

आचार्य सत्यानन्दजी नैष्ठिक का देहावसान



वैदिक विचारों
व आर्य
सामाजिक
सिद्धान्तों का
पुस्तक प्रकाशन
के माध्यम से बड़े

पैमाने पर प्रचार व प्रसार करनेवाले धून
के धनी आचार्य सत्यानन्दजी नैष्ठिक का
दि. २ अप्रैल २०१७ को निधन हो गया।
वे ७८ वर्ष के थे। गत दो वर्षों से वे यकृत
की बीमारी से पीड़ित थे।

आचार्यजी का जीवन बहुतही
संघर्षशील व क्रान्तिकारी रहा है। हरियाणा
के कत्तलहेडी ग्राम (जि. करनाला) के एक
साधारण परिवार में जन्में आचार्यजी आयु
के ३० वर्ष तक खेती व पशुचारण का
काम करते रहे। अनपढ़ होते हुए भी उनमें
कुछ कर गुजरने की ललक थी। आर्य

समाज के सम्पर्क में आने से उनके जीवन
में क्रान्तिकारी मोड़ आया। वैराग्यभाव
जाग उठे और घरबार छोड़कर गुरुकुल में
दाखिल हुए। गुरुकुल धरौन्दा, गुरुकुल
सिंहपुरा, गुरुकुल झज्जर, गुरुकुल कांगड़ी
आदि स्थानों पर रहकर आपने आरम्भ
से लेकर आचार्य एम.ए. तक की पढाई
की और वेद-व्याकरण, आयुर्वेद में विशेष
योग्यता प्राप्त की। तत्पश्चात् नैष्ठिक
ब्रह्मचर्य की दीक्षा लेकर आर्य साहित्य
प्रकाशन कार्य में अन्तिम क्षणों तक जुटे
रहे। 'सत्यधर्म प्रकाशन' संस्था की
स्थापना कर इसके माध्यम से कई विद्वानों
के ग्रन्थों का प्रकाशन किया। साथ ही
आपने कुछ ग्रन्थों की रचनाएँ की और
सम्पादन भी किया। आचार्यजी के चले
जाने से आर्य जगत् की अपूरणीय क्षति
हुई है।

गिरधारीलालजी गड्डानी का निधन



आर्य समाज,
परली-वैजनाथ के
संरक्षक तथा
निष्ठावान वैदिक
धर्मी श्री

गिरधारीलालजी मोहनलालजी गड्डानी का
दि. ४ मई २०१७ को दोपहर १२.१५ बजे
वृद्धावस्था से निधन हो गया। वे ८५ वर्ष
के थे। अपने पश्चात् वे धर्मपत्नी, दो
पुत्र, दो कन्याएं, बहुएं तथा पौत्र-नप्त्रादि

को छोड़कर संसार से विदा हुए ।

आर्य समाज, परली की स्थापना व संवर्धन में श्री गट्टानीसेठ का महत्वपूर्ण योगदान रहा है । विद्वानों के प्रवचनों को सुनकर व वैदिक साहित्य पढ़कर वे सैद्धान्तिक दृष्टि से पक्के बन गये। मंचपर व्याख्यान देना उन्हें आता नहीं था, लेकिन वैदिक तत्वज्ञान पर वे सटीक चर्चा करते थे । सौम्य व मृदु स्वभाव, धार्मिक व सहिष्णु वृत्ति, अनोखा सेवाभाव, कर्मठ

व्यापारकर्म आदि कई गुण उनके व्यक्तित्व की पहचान बने थे । चलते-फिरते वे हरदम आर्य समाज के बारे में चर्चा करते थे । जब भी बाहर के कोई विद्वान परली आ जाते, तब वे उनके भोजन की व्यवस्था गट्टानी परिवार द्वारा होती थी । इस आतिथ्य कार्य में उनकी धर्मपरायणा पत्नी ने भी बहुत बड़ा सहयोग दिया।

उनके पार्थिव पर सायंकाल ६ बजे पूर्ण वैदिक रीति से अन्तिम संस्कार किये।

बालकिशनजी बिल्रा को मातृशोक

आर्य समाज, परभणी के कोषाध्यक्ष श्री बालकिशनजी बिल्रा की माताजी व मानवत शहर की प्रतिष्ठित महिला श्रीमती कौशल्याबाई राधाकिशनजी बिल्रा का दि.६ मई को ८३ वे वर्ष की दीर्घ आयु में निधन हो गया । गत कई वर्षों से वे बीमार चल रही थी । उनके पश्चात् परिवार में चार पुत्र, तीन कन्याएं, दामाद, बहुएं तथा पौत्रादि विद्यमान हैं।

श्रीमती कौशल्याबाई दो-ढाई साल से बीमार चल रही थी । परिवार के सदस्यों को सुसंस्कारित कराने तथा घर की सारी जिम्मेदारियों को सम्भालने में माताजी ने बड़ी भूमिका निभाई। शान्त, सरल व मिलनसार स्वभाव के कारण उन्होंने अपने सद्गुणों की छाप सभी पर छोड़

रखी थी । परली-

वैजनाथ का गट्टानी परिवार यह उनका मातृ-पितृ कुल रहा है । क्या संयोग कहिए कि अपने



बड़े भाई श्री गिरधारीलालजी के निधन के तीसरे ही दिन इस बहन ने भी अपने प्राण त्याग दिये ।

माता श्रीमती कौशल्यादेवी के पार्थिव पर सायंकाल पं.वीरेंद्रजी शास्त्री के नेतृत्व में विजयकुमार अग्रवाल, दयानंद शास्त्री, विजय गावंडे आदियों ने पूर्ण वैदिक पद्धति से अन्तिम संस्कार किये ।

उपरोक्त सभी दिवंगत आत्माओं को
प्रान्तीय सभा की भावपूर्ण श्रद्धांजलि×

॥ओ३म्॥

माझा मराठाची बोलु कवतिके । परि अमृतातेही पैजेसीं जींके ।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें । मेळवीन ॥ (संत ज्ञानेश्वर)

मराठी विभाग

उपनिषद संदेश

परमेश्वर इंद्रियातीत

अपाणिपादो जवनो ग्रहीता पश्यत्यचक्षुः स शृणोत्यकर्णः ।

स वेत्ति विश्वं न च तस्यास्ति वेत्ता तमाहुर्ग्रं पुरुषं पुराणम्॥

परमेश्वराला हात नाहीत, पण तो आपल्या सामर्थ्यरूपी हातांनी जगाची रचना करतो, ग्रहण करतो. त्याला पाय नाहीत; परंतु तो सर्वव्यापक असल्यामुळे सर्वाहून अधिक वेगवान आहे. त्याला डोळे नसले तरी सर्वकांही ऐकतो. त्याला अंतःकरण नाही. तरीही तो सर्वांना जाणतो. अशा त्या परमेश्वराच्या मर्यादा(सीमा) ओळखणारा कोणीही नाही, त्यालाच सनातन, सर्वश्रेष्ठ व पूर्ण असल्यामुळे पुरुष म्हणतात.

(श्वेताश्वेतर उपनिषद ३/१९)

दयानंद वाणी

टिळा लावणे व्यर्थ

आम्ही असे विचारतो की, लहानसा टिळा कपाळावर लावल्याने जर माणूस वैकुंठात जात असेल, तर संपूर्ण चेहऱ्यावर गंधाचा लेप लावल्याने किंवा सारे तोंड काळे केल्याने अथवा अंगभर गंध फासल्याने माणूस वैकुंठाच्याही पलीकडे जात असेल की नाही? म्हणून या साऱ्या गोष्टी व्यर्थ आहेत. आता या वैष्णवांपैकी खाकी पंथाचे म्हणजे अंगाला धूळ व राख फासणारे गोसावी लंगोटी लावून, जटा वाढवून, साधूचा वेश धारण करून, धुनी(शेकोटी) पेटवून शेकत बसतात. ते बगळ्यासारखे ध्यान लावतात. भांग पितात आणि गांजा व चरस ओढतात. त्यामुळे त्यांचे डोळे लाल भडक होतात. ते पसाभर अन्न, पीठ, पेसे, कवडी यांची भीक लोकांकडे मागतात आणि गृहस्थांच्या मुलांना भुलवून आपले चले बनवितात. त्यांच्यामध्ये बहुधा मजूरच असतात. कोणी विद्या शिकत असेल तर ते त्याला शिकू देत नाहीत.

(सत्यार्थप्रकाश-११वा समुल्लास)

आर्य समाज का व कशासाठी ?

– रमेश ठाकूर (गुंजोटीकर)

एकोणवीसावे शतक × वैदिक धर्म भारतीय सभ्यता आणि समाज याची अवस्था अत्यंत दयनीय झाली असल्याचा काळ × एकीकडे शुद्ध, सनातन, सरळ अशा वैदिक धर्माची पवित्रता साफ संपून त्याची जागा कपोलकल्पित नानाविध मतांच्या अवडंबरांनी आणि मलीन व कलुषित झालेल्या विचारांनी घेतली होती. एखाद्या सरितेने खळखळाटाने व्यापून टाकलेल्या पर्वतराजीस पार पार करून सपाट प्रदेशात प्रवेश करावा, प्रवासाला थोडीसी स्थिरता प्राप्त करावी व त्याचा परिणाम त्या सरितेतील स्फटिकासारख्या निर्मळ, पवित्र जलात भोवतीचा गाळ मिसळून जशी अपवित्र व्हावी, तशी स्थिती वैदिक धर्माचीही झाली होती. वैदिक धर्माच्या पवित्र जलात मिथ्याविश्वास, अंधश्रद्धा, भानामती, जादूटोणा, जातिप्रथा, स्पृश्यास्पृश्यता अशा अनेकविध मालिन्याने अक्षरशः दुर्गंधपूर्ण अशी स्थिती झाली होती.

पंच महायज्ञाचे पवित्ररूप सोडून वशीकरणात सारा मानव गुरफटून गेला होता. सर्वव्यापक, सर्वातिर्यामी परमेश्वर

असे तोंडाने म्हणावयाचे व दुसरीकडे त्याला चार दिवारीत कोंडून ठेवायचे असा प्रकार सुरू झाला. त्या निराकार परमेश्वराची जागा साकार मानवाकृती मूर्त्यांनी घेतली गेली. त्याची उपासना करण्याचा दिखावा सुरू झाला. त्या दैवादिकांच्या मूर्त्यांच्या साक्षीने राजरोसपणे दारू, चरस, गांजा यांसारख्या मादकद्रव्यांनी घेतली. सारी देवालये याचे केंद्र बनले; किंबहुना अशा उन्मत्त, दुराचारी, निरक्षर पुजाऱ्यांनी या देवस्थानांची प्रमुख जागा घेतली. पुजारी हे आता पूजेचे अरि अर्थात शत्रू बनले. खऱ्या तीर्थांची जागा नदी किनारे आर्दींनी घेतली. वैदिक वर्णव्यवस्था लुप्त झाली. ज्ञानाचे उपासक व प्रचार-प्रसारक म्हणजे ब्राह्मण, स्वाभाविकपणे इतरांच्या संरक्षणासाठी झटणारा तो क्षत्रिय, समाजाची गरज लक्षात घेऊन आवश्यक त्या साधनांचा पुरवठा करणारा तो वैश्य व सेवापरायणतेचा गुण असलेला तो शूद्र × प्राचीन समाज रचना पद्धतीला तिलांजली देऊन त्यांचे समाजात कप्पे बनवले गेले. ज्ञानप्रसार करणाऱ्याच्या उदरी जन्माला आला म्हणून ज्ञानाचा उपासक नसलेला,

संपूर्णतः अज्ञानी देखील ब्राह्मणच मानला जाऊ लागला. यातूनच जातिप्रथा, जन्मजात जातिप्रथा अस्तित्वात आणली गेली. सेवाभाव असलेल्या व्यक्तीच्या मुलांनाही शूद्रच मानले जाऊ लागले व त्यास कायम ज्ञानापासून दूर ठेवण्याचा प्रयत्न केला जाऊ लागला. एवढेच नाही तर त्यांना अस्पृश्य मानले जाऊ लागले. त्यांना वाळीत टाकले जाऊ लागले. पशूपेक्षाही हीनतेने वागविले जाऊ लागले. महिलांना चूल आणि मूल एवढ्या सीमेतच ठेवले गेले. इतरांना वेदज्ञानापासून दूर ठेवले गेले. अज्ञानाच्या अंधःकारात सारा समाज गुरफटला गेला. तर्क, विचार शक्ती यास कसलेच स्थान राहिले नाही. धर्माच्या नावाखाली सर्वत्र चुकीच्या रुढी-परंपरांना उधाण आले. याचा फायदा परकीयांनी घ्यायला सुरुवात केली. सर्व दिशेने भारतावर आक्रमणे होऊ लागली. याचा फायदा धूर्त युरोपीयनांनीही घेतला. सारा भारत व भारतीय जनता गुलामगिरीच्या खोल गर्तेत लोटली गेली.

भौतिक, रसायन, जैवविज्ञान, खगोलशास्त्रात, स्थापत्य, शिल्पविद्या, संगीत, वैद्यक, गणित आदी विद्यांच्या बाबतीत युरोपीयन आपलीच मक्तेदारी समजू लागले. रुढी, अंधश्रद्धा, मूर्तिपूजा

आदी युरोपीयनांचे चेष्टेचे विषय झाले. ते उघड टवाळी करू लागले. याची परिणती भारतीयांच्या मुस्लिम व ख्रिश्चन धर्मात प्रवेश यांनी घेतली. या साऱ्याचा परिणाम आर्य जाती क्षीण बनण्यात झाला. आर्य सभ्यतेचा पावला-पावलावर पराभव होऊ लागला. एका उच्चभ्रू मानल्या जाणाऱ्या गर्भश्रीमंत कुटुंबात जन्मलेल्या 'मूलशंकर' या नावाने ओळखल्या जाणाऱ्या बालकाच्या मनावर विलक्षण परिणाम झाला. सच्चा परमेश्वर व सत्यज्ञानाच्या शोधार्थ या बालकाने सुखाचा, घराचा त्याग केला व सत्यज्ञानाच्या शोधार्थ भारतभर भटकत राहिला. यासाठी बालवयातच संन्यास दीक्षाही घेतली व दयानंद सरस्वती बनले. याच भ्रमंतीत प्रज्ञाचक्षू स्वामी विरजानंद सरस्वतींची भेट झाली. वेदातील खऱ्या ज्ञानाचा व त्यातील सूक्ष्म व्याकरणाचा अभ्यास करता आला. सर्व आयुष्यभर वेदातील सत्यज्ञानच समाजासमोर ठेवण्याचा संकल्प केला. गुरु विरजानंदांना हीच गुरुदक्षिणा दिली. अनंत संघर्षाला तोंड देत धर्ममार्तंडाबरोबर शास्त्रार्थ केले. भव्य व देखणी शरीरयष्टी, भारदस्त, प्रभावी व मधुर वाणी यामुळे धर्माचे चले म्हणवल्या जाणाऱ्या धर्मगुरुंचाही

शास्त्रार्थात पराभव होऊ लागला. हे काम आणखी वेगाने भारतभर फैलावण्याची गरज निर्माण झाली. यासाठी एकटा माणूस किती पुरणार? म्हणूनच स्वामी दयानंदांनी (मूळचे मूलशंकर) सागरतीरी वसलेल्या मुंबापुरीतील (सध्याची मुंबई) गिरगावात डॉ.माणिकचंदजी यांच्या बागेत चैत्र शुद्ध प्रतिपदा म्हणजेच गुढीपाडवा या दिवशी 'आर्य समाजाची' स्थापना केली. सुरुवातीस २८ नियम निर्धारित केले. परंतु त्यातील पुनरावृत्ती टाळून दहा नियम निर्धारित केले. आर्य समाजाचे दहा नियम कोणत्याही जात, पंथ, मतमतांतर यात गुरफटणारे नाहीत. हे नियम साऱ्या विश्वातल्या मानव समाजासाठी उपयुक्त व जीवन सुधारणेचे नियम आहेत. ते शुद्ध व वैज्ञानिकतेला बळ पोहोचविणारे आहेत. सर्व समाजासाठी हितकारक आहेत.

स्वामी दयानंदांनी आपल्या नावाने

कोणताही समाज वा संस्था उभारली नाही. त्यांनी सांगितले की, त्यांच्या नावाने कोणताही पंथ नको, देवालय नको, त्यांच्या मूर्ती वा पुतळे कोठेही उभारले जाऊ नयेत. ते म्हणायचे, 'ः'ज्या विचारांचा पुरस्कार केला, ते विचार माझे नाहीत, प्राचीन वेदग्रंथात जे ज्ञान, जे विज्ञान, जे अध्यात्म सांगितले आहे. ते मी प्रकाशात आणण्याचे काम केले आहे. हे परमेश्वराचे आहे, माझे नाही.'"

स्वामी दयानंदांचा हा आदेश ही पताका घेऊन आम्ही आर्य समाजी किती नेटाने पुढे जाऊ इच्छितो? खरेच आम्ही हे आव्हान स्वीकारायला तयार आहोत का? हाच प्रश्न आम्हाला विचारत आहे, यासाठी पुढे सरसावणार आहोत का ?

-३६, 'यज्ञ', इंद्रप्रस्थ गृहनिमाण संस्था, गारखेडा, औरंगाबाद

मो.९४२३१७८८०३

सभेतर्फे तीन ठिकाणी संस्कार शिबिरे संपन्न

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेच्या मार्गदर्शनाखाली उन्हाळी सुट्यांमध्ये तीन ठिकाणी संस्कार शिबिरे पार पडली. आर्य समाज गारखेडा, औरंगाबादच्या वतीने हर्सूल परिसरातील वेदपाठशाळेत मोठ्या प्रमाणात 'आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिबिर' घेण्यात आले. आर्य समाज शहापुर(ता.देगलूर जि.नांदेड) च्या वतीने गावातील जि.प.शाळेत मुलांसाठी 'मानवता संस्कार' शिबिर पार पडले. तर गुंजोटी ता.उमरगा येथे संस्कार शिबिर झाले. या शिबिरांचा वृत्तांत पुढील अंकात वाचा.- संपादक

विवाह सोहळ्यांतील मंगल अक्षता

- सौ.मालन रुद्रवार

वेदशास्त्राप्रमाणे मानवी जीवनाचे चार टप्प्यात विभाजन केले आहे. चार आश्रम मानले आहेत. १.ब्रह्मचर्य २.गृहस्थ, ३. वानप्रस्थ, ४.संन्यास × त्यापैकी दुसरा म्हणजे गृहस्थाश्रम यांची सुरुवात विवाह(लग्न) संस्कारापासून होते. विवाहानंतरच गृहस्थाश्रमात प्रवेश होतो आणि ह्याच आश्रमाबद्दल मला इथे सांगावयाचे आहे.

विवाह हा जीवनातील एक श्रेष्ठ व पवित्र असा संस्कार आहे. विवाह म्हणजे दोन जीवांचे मिलन नसून दोन पारिवारांचे मिलन आहे. हे बंधन नसून गृहस्थाश्रमाची सुरुवात आहे. जो चारही आश्रमामध्ये श्रेष्ठ मानला जातो व जो बाकीच्या तिन्ही आश्रमाचा आधार आहे. अशा गृहस्थाश्रमाची सुरुवात ज्या पवित्र विवाह संस्काराने होते, त्यातही मोठ्या प्रमाणात अंधश्रद्धा बोकाळल्या आहेत. मूळ विवाह संस्कार विधी सोडून चुकीच्या विधीचा तर अंगिकार केला जातोच, पण आशीर्वादासाठी अनिष्ट पद्धतीने अक्षतांचा वापर केला जातो.

अक्षताबाबत आपण पूर्वापार

चालत आलेलीच प्रथा चालवत आहोत. परंतु काळमानानुसार, परिस्थितीनुसार आपण ती पद्धत बदलण्यास कांहीच हरकत नाही. लग्नमध्ये वधूवरांच्या अंगावर अयोग्य पद्धतीने अक्षता टाकल्या जातात. तुम्ही म्हणाल त्याशिवाय(आशीर्वादाशिवाय) लग्न कसे होणार ? अक्षता टाकण्यास काय चूक आहे ? आहे चूकच आहे.

पहिला मुद्दा म्हणजे 'अन्न हे पूर्णब्रह्म×' अन्न हे पूर्णब्रह्म× हे आपण मानतो व म्हणतो. हे संतवचन, वेदवचन, ऋषिवचन. परंतु आपण त्याचा किती आदर करतो, हे आपण ठरवावे. कारण लग्न प्रसंगी आपण जी अक्षता वधू-वरांवर टाकतो ती वधू-वरांवर (डोक्यांवर) पडतच नाही. ती फक्त पायदळीच तुडविली जाते व त्यामुळे अन्नाची नासाडी होते. एका लग्नात किमान १० किलो तरी अक्षता टाकल्या जात असतील, जी की व्यर्थच जाते व नाश पावते. जी कुणाच्या मुखातही जात नाही. पूर्वीच्या काळी म्हणजे ७०-८० वर्षांपूर्वी अक्षता ही फक्त हळद लावूनच पिवळी केल्या

जायची व त्यावेळेस समाज बांधवांची संख्या पण आजच्या इतकी (हजारावर) नसायची. त्या काळातील प्रथेनुसार ती अक्षता ज्या घराण्यातील समारंभ असेल, त्या घराण्याचा परित समाज ती अक्षदा गोळा करून नेत असे व तिचा उपयोग करीत असे. परंतु आता तसे होतांना दिसत नाही. दुसरे म्हणजे हौस म्हणून आता तीच अक्षदा पंचरंगात (जे खाण्या योग्य नाहीत) रंगवून उधळली जाते. लग्न समारंभात आशीर्वाद देण्यासाठी लोक खूप संख्येने असल्यामुळे अक्षतांचे प्रमाण देखील जास्त असते व ती सर्व अक्षदा वाया जाते. हा एक मुद्दा व दुसरे म्हणजे धार्मिक किंवा पापभीरूतेच्या दृष्टीने पाहिले तर अन्न पायदळी तुडविण्याचे पाप × ह्या सर्व गोष्टींचा विचार करता मला वाटते की ही प्रथा बंद करावी, पण आम्ही आशीर्वाद देऊ नका, असे म्हणत नाहीत, द्या परंतु वेगळ्या पद्धतीने पुष्पवृष्टी करून फुलांच्या पाकळ्या तांदळा ऐवजी सर्वांना द्या. जी की श्रेष्ठ पद्धत आहे. तसे पाहिले तर आशीर्वाद हा अंतःकरणातूनच दिला जातो. नवऱ्या मुली उखाण्यात नावसुद्धा घेतात- ÷आशीर्वादाची फुले वेचते मी झुकून, ... रावांच नाव घेते तुमचा मान राखून ×'

पुष्पवृष्टीची पद्धत वैदिक कालापासून चालत आली आहे. ज्यांना आपण महापुरुष मानतो. अशा राम, कृष्ण यांच्यावर सुद्धा पुष्पवृष्टीच केली. तशीच पुष्पवृष्टी नवदांपत्यावर केल्यास छान वाटेल. वैदिक काळामध्ये जसे कुणी श्रेष्ठ कार्य केले की, ऋषी-मुनी त्यांच्यावर पुष्पवृष्टी करीत. तद्वतच आपण सुद्धा ÷नवदांपत्य हे श्रेष्ठ अशा गृहस्थाश्रमात प्रवेश करीत आहेत. म्हणून उपस्थितांनी त्यांच्यावर पुष्पवृष्टी करण्यास काय हरकत आहे ?' पहा× आम्ही एक योग्य, नामी व स्वस्त असा उपाय सुचवत आहोत. आजच्या महागाईच्या जमान्यात तांदळाच्या अक्षता वाया घालणे परवडण्यासारखे नाही, असे वाटते. भले यजमान खूप श्रीमंत असतील, पण आपण एक सामाजिक बांधिलकी म्हणून हा अपव्यय टाळायला पाहिजे व एक छान नवा पायंडा पाडायला कांहीच हरकत नाही.

-रुद्रवार निवास, मोंढा विभाग,

माजलगाव जि.बीड
मो.९४२३२८७४२५



वेदांमध्ये गोहत्या, गोमांस भक्षण नाही

- प्राचार्य देवदत्त तुंगार(नांदेड)

वेद हा शब्द विद् धातुपासून उत्पन्न झाला असून त्याचा अर्थ जाणणे म्हणजे व्यवहारतः ज्ञान असा होतो. आपल्या धर्माचे प्रमाणभूत ग्रंथ वेद आहेत. ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद आणि सामवेद हे चार वेद आहेत. लोकमान्य टिळकांनी हिंदू धर्माची व्याख्या करतांना जो वेदप्रामाण्य मानतो म्हणजे जो वेदाला मानतो, तो हिंदू होय असे म्हटले आहे. ऋषी, मुनी, संत, महात्मे, महापुरुष यांनी वेदांची महती गायिली आहे. आधुनिक काळात वेदांचे महत्व पुन्हा पटवून देण्याचे ऐतिहासिक महत्वपूर्ण कार्य आर्य समाजाचे संस्थापक महर्षी स्वामी दयानंद सरस्वती यांनी केले असून त्यामुळेच त्यांना 'वेदोद्धारक' म्हणजे वेदांचा उद्धार करणारे दयानंद असेही म्हणतात.

वेदाबद्दल अनेक समज-गैरसमज आहेत. वेदामध्ये 'पशुबळी' ची प्रथा आहे, हिंसा आहे, अश्लीलता आहे अशा अनेक चुकीच्या समजुती समाजात होत्या आणि आहेत. याचे कारण वेदमंत्रांचा चुकीचा अर्थ लावणे हे आहे. महर्षी दयानंदांनी (१८२४ ते १८८३) मथुरेचे स्वामी विरजानंद यांच्याकडे वेदांचा कसून

सखोल अभ्यास केला व गुरुच्या आज्ञेप्रमाणे सर्व भारतभर प्रवास करून वेदप्रचार केला. त्यासाठी त्यांनी मुंबईतील काकडवाडी-गिरगांव येथे १० एप्रिल १८७५ रोजी आर्य समाजाची स्थापना केली. स्वातंत्र्य मिळविणे व समाजाची सर्वांगीण सुधारणा करणे हे आर्य समाजाचे मुख्य ध्येय ठरले. त्यामुळे अनेक स्वातंत्र्य सैनिक आर्यसमाजी असल्याचे दिसते. आर्यसमाज ही सामाजिक सुधारणावादी व परिवर्तनवादी संस्था आहे.

गतवर्षी उत्तरप्रदेशातील दादरी येथील अखलाख नामक मुस्लिम गृहस्थाने गोहत्या करून गोमांसाचा साठा केला, अशा आरोपावरून त्याची हत्या करण्यात आली व त्याच्या कुटुंबियांना मारझोड करण्यात आली. याप्रकरणी आधिक चौकशी झाली असता गोहत्या किंवा गोमांस भक्षण झालेच नाही, असे आढळून आले. यासंबंधी आरोप-प्रत्यारोप करण्यात येत असून देशभर विषारी वातावरण निर्माण होत आहे किंवा निर्माण करण्यात येत आहे. कोणत्याही माणसाची हत्या करणे गैरच आहे. आरोप खरे असोत की खोटे एखाद्या मानवाची

निर्घृण हत्या निषेधार्हच असून कायदा हातात घेऊन अतिरेकी हिंसा करणे कधीच समर्थनीय ठरू शकत नाही.

याप्रकरणी वादग्रस्त विधाने होत असून वेदांमध्ये 'गोमेध यज्ञात गाईची हिंसा होत असे, आपले पूर्वज गोमांस खात होते', अशी वक्तव्ये केली जातात. आजही अनेक आदिवासी, अनेक जातींची माणसे गोमांस खातात अशी विधाने करण्यात येत आहेत. वेदांमध्ये खरे काय लिहिले आहे हे समजून न घेताच, वेदमंत्राचा कांही हितसंबंधी पाश्चात्य विद्वानांनी लावलेला चुकीचा अर्थ यामुळे वेदामध्ये गोहत्या आहे. अशी निराधार टीका होत आहे. दयानंद स्वामींनी जे वेदभाष्य लिहिले आहे व जो वेदोपदेश केला आहे. त्यानुसार वेदामध्ये यज्ञामध्ये कुठेही पशुबळीचा हिंसेचा उल्लेख नाही. वेदज्ञानाला बदनाम करण्याचा हा प्रयत्न आहे. छत्रपती शिवाजी महाराजांपासून छत्रपती शाहू महाराजांपर्यंत सर्वांनी वेदांबद्दल पूज्य बुद्धी व्यक्त केली असून 'वेदोक्ताचा अधिकार' सर्वांना मिळावा यासाठी आर्यसमाजाच्या माध्यमातून छत्रपती वेदोक्ताचा म्हणजेच ज्ञानसंपदानाचा बहुजन समाजाला, सर्व मानवांना अधिकार आहे, हे स्वामी दयानंदांनी आपल्या वेद

भाष्यातून दाखवून दिले. योगी अरविंदांनी यासंबंधी म्हटले आहे की, वेद-भाष्याची गुरुकिल्ली दयानंदांनी उपलब्ध करून दिल्यामुळे सर्वांना ज्ञानाची कवाडे खुली झाली आहेत. प्रसिद्ध साहित्यिक आधुनिक महाराष्ट्रातील अग्रगण्य विचारवंत पत्रकार न्यायाधीश गोपाळ हरि देशमुख उर्फ लोकहितवादी यांनीच वेद-भाष्य प्रकाशनाला स्वामी दयानंदांना सहकार्य केले. मुंबई आणि अहमदाबाद येथील आर्यसमाजाचे अध्यक्षपद लोकहितवादी देशमुख यांनी केवळ महर्षी दयानंदांनी सांगितल्यामुळेच स्वीकारले. प्राचीन काळातील कपिल, कणाद आदी ऋषी प्रमाणेच आधुनिक काळात दयानंद हे महान ऋषी आहेत, असेही लोकहितवादी गौरवोद्गार काढले. तेव्हा दयानंदांनी विनम्र भावनेने सांगितले की, 'कपिल, कणाद इत्यादींच्या चरण धुळीच्या एका कणा एवढाही मी नाही', असे होते लोकहितवादी व दयानंद....* त्यांनी लावलेला वेदाचा अर्थच बुद्धिगम्य प्रमाणभूत आहे. वेदामध्ये गोपालन, गोसंवर्धन करावे, गोहत्या करू नये असेच ठाम प्रतिपादन केले आहे. हे ध्यानी घेतले तर गोहत्या आणि गोमांस भक्षण यासंबंधीचे भ्रम संपुष्टात येऊ शकतात.

सूर्यपंथेचि चालावे x

- डॉ.नयनकुमार आचार्य

सकाळचे प्रसन्न वातावरण अगदीच मन प्रफुल्लीत करणारे असते. प्रभातवेळी पूर्वेकडे सहजपणे नजर टाकल्यास लाल-तांबूस रंगाचा बालसूर्य हळू-हळू आपले रूप पालटतांना दिसतो. जस-जसा तो वर सरकतो, तसा-तसा अंधारावर मात करीत त्याच स्वारी आसमंताला उजळविते. सारी सृष्टी तेजाने न्हाऊन निघते. त्याची कोवळी किरणे पडताच लता-वेली व जीव-जंतूंना नवजीवन मिळू लागते. सर्व जड-चेतन समूहाला सूर्यप्रकाश व्यापून टाकतो. अशी एकही जागा राहत नाही, जिथे रविकिरणांचा प्रवेश नसतो? त्याचा स्पर्श सुखावणारा तर आहेच, पण सुविकसित होण्यासाठी प्रेरक देखील आहे.

इतर मोसमांचे सोडा, पण उन्हाळ्यात मात्र हा भास्कर उग्र रूप धारण करताना दिसतो. याची प्रचिती यावर्षीच्या ग्रीष्मकाळात फारच प्रखरपणे जाणवतेय. सध्या कडक उष्णतेची दाहकता वेदनादायक बनली आहे. वाढत्या तापमानामुळे प्राणिसमूहांचे जगणे असह्य झालेय. उन्हाच्या काहिलीने संतप्त

झालेल्या अनेक जीवांची विशेषतः शेतात राबणाऱ्या भूमिपुत्रांची, काबाडकष्ट करणाऱ्या मजुरांची, कारखाण्यात राबणाऱ्या कामगारांची, रस्तो-रस्ती वणवण भटकणाऱ्या दीन-दुबळ्या याचकांची परिस्थिती पाहून मन सुन्न होते.

÷घामातून मिळतील मोती' या दुर्दम्य आशावादावर जगणाऱ्या या मंडळींनी मात्र ही भयावह उष्णता अंगवळणी पडलेली असते. सुखाच्या सावलीची किंवा कुलर व पंख्याच्या वाऱ्याची सवय असलेली मंडळी सूर्याच्या प्रखरतेबद्दल कांहीही बोलोत? त्यांची अनुभूती कोरीच ठरणार, हे मात्र नक्की.

समग्र नभोमंडळाचा तेजोमय नक्षत्रराज सूर्य खरे तर आपला मित्रच x त्याने कितीही प्रखर रूप धारण केले, तरी सर्वार्थाने तो आपल्या जीवनाचा आधारच आहे. जगण्याची प्रेरणा त्यांच्याकडूनच तर आपणांस मिळते. म्हणूनच त्यांच्या विविध रुपांचे आपण स्वागतच केले पाहिजे.... कारण समग्र ब्रह्मांडासाठी सर्वोपकारक असा सर्वोच्च घटक म्हणून त्याकडे पाहिले जाते. सूर्य हा आपला

मार्गदर्शक गुरु× अबोल असा शिक्षक × आपण त्याकडून कधी शिकण्याचा प्रयत्न केलाच नाही. त्यांच्या बाह्य मनमोहक रूपाकडे पाहून आपण काव्ये रचली, गाणी गायिली, ललितलेखन केले, व्याख्याने दिली × पण त्याच्या अंतरंगातील भावविश्वाला कधी निरखून पाहिलेच नाही × सूर्याच्या भौतिक व आध्यात्मिक स्वरूपाला जाणून घेतल्यास तो खऱ्या अर्थाने आमच्या सुखाचे आगर ठरतो.

सूर्यासाठी अमरकोषात ३७ पर्यायी शब्द आले आहेत. निघंटू या ग्रंथात आलेले ३० सूर्यवाची शब्द व त्यांची निर्वचने (उत्पत्ती अर्थ) मनोरम अशी आहेत. **÷सूर्यनमस्कार'** या व्यायामप्रकारात उल्लेखिल्या जाणाऱ्या भास्कर, भानू, रवि, आदित्य, अर्क, सविता, मित्र, हिरण्यगर्भ, मरिचीमालिनी, अरुण, खग, पूषण या १२ नावात विशेष अर्थ दडले आहेत. त्या अर्थाचे स्मरण करीत ते-ते भाव जीवनी धारण करणे सार्थक ठरते. वेदवाङ्मयात सूर्याला संबोधित करून त्यापासून बरेच कांही शिकण्याचा बोध होतो. **÷तन्तुम् तन्वन् रजसो भानुम् अन्विहि ।'** हा ऋग्वेदातील मंत्रांश आजच्या मानवाला जगण्याचे बळ देतो. जीवनरूपी वस्त्रांचे आडवे व उभे

धागे विणत आकाशातील **÷सूर्या'**च्या सदगुणांचे अनुकरण करण्याविषयीचा मौलिक उपदेश यात दडला आहे.

÷सविता'शब्दात (सु)सव् हा धातु प्रसविणे, जन्मण्यास प्रेरित करणे या अर्थाने वापरतात. पहा × कशी गंमत आहे. सूर्य हा सृष्टीतील प्रत्येक वस्तूला जन्म देत नाही. त्या वस्तूंचा काडीमात्र संबंध नाही. तरी पण त्याची किरणे पडली असता, त्या-त्या वस्तू किंवा पदार्थातील उत्पादकशक्ती वृद्धिंगत होते. भूमी, झाडे, वेली, जीव-जंतू यांवर सूर्याची किरणे पडली की, ती आपोआप विकसित व्हायला लागतात× त्या-त्या वस्तू ऊर्जावान होऊ पाहतात. सूर्याने आपल्या किरणांच्या माध्यमाने वस्तूंमधील जन्मण्याच्या प्रक्रियेला चालना व प्रेरणा दिली आहे.

आज सारे विश्व सूर्याच्या अक्षय ऊर्जेमुळे प्रगतिपथावर आहे. आपल्या हजारो तेजोमय किरणांनी समस्त प्राणिमात्राला जीवनदान देणारा सूर्य त्या मोबदल्यात कांहीही मागत नाही. दातृत्वाचा हात सर्वांवर आहे. कोणतीही भेदभावना त्याच्याकडे नाही. आपल्या उदार अंतःकरणाचे हात सर्वांच्या डोक्यावर आहेत. मग ब्रह्मांडातील

कोणतेही ग्रह असो की त्या ग्रहावरील कोणताही देश व प्राणिमात्र असोत.... अथवा क्षुद्र बुद्धितून उदयास आलेले मानवनिर्मित मत-पंथ(धर्म) व जातीभेद असोत... सर्वांना तो समानतेने न्याय देतो. हा दानशूर सवितादेव सतत गतिमान आहे, तो कधीच थांबत नाही. त्याचे अवागमन सर्वांसाठी प्रेरणेचा दीपस्तंभ आहे. प्रसंग कोणताही येवो तो आपले स्वरूप सोडत नाही. सुभाषितकाराने म्हटल्याप्रमाणे - 'उदये सविता रक्तः, रक्तश्च अस्तमने तथा।' सूर्य हा उगवतांनाही लाल व मावळतांनाही लालच असतो. ऐश्वर्याच्या प्रसंगी किंवा संकटकाळी त्याची एकरूपता असते.

माणसाने जगावे तर सूर्यासारखे तेजस्वी बनून× कविवर्य भा.रा.तांबे यांनी १९२० साली रचलेल्या या ओळी बराच आशय सांगून जातात. माणसाने फक्त त्यातील आशय जाणून सूर्याप्रमाणे उत्साही बनण्याचा प्रयत्न करावा.

घन तमी शुक्र बघ राज्य करी

रे खिन्न मना बघ जरा तरी...

फूल गळे, फळ गोड जाहले

बीज नुरे, डौलात तरु डुले,

तेल जळे, बघ ज्योत पाजळे,

का मरणिं अमरता ही न खरी ?

(साभार- दै.सकाळ दि.०५मे २०१७
रोजीचे 'गुडमॉर्निंग' सदर)

श्रद्धानंद गुरुकुलात प्रवेश प्रारंभ

आर्य समाज परळीतर्फे चालविण्यात येणाऱ्या स्वामी श्रद्धानंद गुरुकुलात आर्षविद्या, संस्कृत व नैतिक मूल्यांचे शिक्षण घेण्याच्या उद्देशाने व श्रेष्ठ मानव घडविण्याच्या पवित्र भावनेने पालकांनी आपल्या मुलांना गुरुकुलात प्रवेश द्यावा, असे आवाहन आर्यसमाज परळीचे प्रधान श्री जुगलकिशोर लोहिया व मंत्री उग्रसेन राठौर यांनी केले आहे. या गुरुकुलात यावर्षीपासून सुयोग्य आचार्य, उत्तम शिक्षक तसेच मुनीजनांचे सान्निध्य ब्रह्मचाऱ्यांना लाभणार असून भोजन, निवास व आदर्श दिनचर्येसह अध्ययन-अध्यापनाची चांगली व्यवस्था केली जात आहे. जे गरीब व होतकरु विद्यार्थी असतील, त्यांना मोफत तर जे चांगल्या परिस्थितीतील विद्यार्थी असतील त्यांना नाममात्र शुल्क आकारले जाणार आहे.

तरी या गुरुकुलात अधिकाधिक मुलांना पाठवून त्यांचा सर्वांगीण विकास साधावा, ही विनंती करण्यात येत आहे.

शिवणखेड आर्य समाजाच्या नव्या वास्तूचे उद्घाटन संपन्न

÷राष्ट्रनिर्मितीत आर्य समाजाचे मोलाचे कार्य' - माजी आ.खंडाडे

÷उर्वरित इमारत पूर्ण करण्याचे काम करु' - आ.विनायकराव पाटील

÷एकोणिसाव्या शतकात आर्य समाज या संस्थेने सामाजिक, राष्ट्रीय व आध्यात्मिक कार्यात मोठी भूमिका बजावली असून राष्ट्र व समाजाला विशुद्ध वैदिक ज्ञानाने जागृत करण्याचे पवित्र कार्य केले. अशा महान संस्थेस आम्ही केलेले सहकार्य म्हणजे समाज ऋणातून उतराई होण्याचा अल्पसा प्रयत्न आहे', असे प्रतिपादन अहमदपुरचे माजी आ.श्री बब्रुवाहन खंडाडे यांनी केले.

चाकुर तालुक्यातील शिवणखेड(बु.) येथे श्री खंडाडे यांच्या कार्यकाळात आमदार फंडातून मिळालेल्या ४ लाखाच्या निधीतून व लोकसहभागातील ६ लाखाच्या निधीतून उभारण्यात आलेल्या आर्य समाजाच्या नूतन इमारतीचे उद्घाटन दि.३० एप्रिल रोजी विद्यमान आ.श्री विनायकराव पाटील यांच्या हस्ते झाले. त्यावेळी अध्यक्षस्थानावरून बोलतांना श्री खंडाडे यांनी वरील विचार मांडले. यावेळी प्रमुख पाहुणे म्हणून महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेचे उपप्रधान श्री राजेंद्र दिवे, भजनोपदेशक पं.विमलदेव आर्य(बरेली),

जि.म.बँकेचे संचालक एन.आर.पाटील व सी.ए.दिगंबर साके हे उपस्थित होते.

यावेळी आ.श्री विनायकराव पाटील यांनी आर्य समाज भवनाचा पुढील अर्धवट भाग आपल्या आमदार फंडातून बांधून देण्याचे आश्वासन दिले. ते आपल्या भाषणात म्हणाले - ÷÷आर्य समाज ही सर्वांगिण प्रगती साधणारी चळवळ आहे. या संस्थेस हातभार लावणे म्हणजे सर्वोच्च पुण्यकार्य आहे. येथे समाज घडविण्याचे पवित्र कार्य घडते. म्हणूनच या आर्य समाजाचे उर्वरित बांधकाम करून देण्याचे काम आता आमचे आहे× ते पुढे म्हणाले- ÷इतर समाजमंदिराचा लोक दुरुपयोग करतात, पण आर्य समाज मात्र मानवतेचा उद्धार करण्यात अग्रणी असतो. यासाठी अशा संस्थांना उभारी देणे, हे लोकप्रतिनिधींचे आद्य कर्तव्य असते.'

याप्रसंगी सर्वश्री पं.सुधाकर शास्त्री, राजेंद्र दिवे व दिगंबर साके यांनीही विचार मांडले. प्रारंभी सर्व मान्यवरांचा आर्य समाजाच्या वतीने सत्कार करण्यात

आला. नंतर पं.विमलदेव शास्त्रींनी भजन सादर केले. सकाळच्या पूर्णाहुती यज्ञात चार यजमान दांपत्य सहभागी झाले. कार्यक्रमात गावातील वयोवृद्ध नागरिक श्री बाबुराव गवरे यांचा आमदारांच्या हस्ते सत्कार करण्यात आला. कार्यक्रमाचे प्रास्ताविक ज्येष्ठ आर्य कार्यकर्ते व संरक्षक व्यंकटराव कुल्ले यांनी केले. तर सूत्रसंचलन कु.गवरे व श्री किशनराव शिंदे गुरुजी यांनी केले. कार्यक्रमास लातूर, परळी, निलंगा, उदगीर, देवणी, औराद(श.), मोगरगा, टाका, वलांडी, गांजूर आदी ठिकाणांहून आर्य कार्यकर्ते मोठ्या संख्येने आले होते.

तीन दिवस वेदप्रचार

दरम्यान या उद्घाटन समारंभानिमित्त गावात आर्य समाजातर्फे दि.२८, २९ व ३० एप्रिल रोजी वेदप्रचाराचा कार्यक्रम घेण्यात आला. दररोज सकाळी यज्ञ, वचन, भजन तर दुपारी विशेष संमेलन व रात्री सामाजिक व राष्ट्रीय विषयावर व्याख्याने पार पाडली. यात सर्वश्री पं.विमलदेवजी आर्य(बरेली), पं.प्रतापसिंहजी चौहान, पं.सौ.कंचनदेवी शास्त्री, पं.वैजनाथअप्पा करकेले यांनी भजने सादर केली. तर पं.सुधाकर शास्त्री, पं.लक्ष्मणराव आर्य गुरुजी, डॉ.नयनकुमार

आचार्य, पं.सोममुनिजी, पं.(प्रा.)चंद्रेश्वरजी शास्त्री आदींनी विभिन्न विषयांवर मार्गदर्शन केले. दि.२८ ला दुपारी सौ.नम्रता धनराज शिंदे यांच्या अध्यक्षतेखाली महिला संमेलन पार पडले. यात लातूरच्या प्रा.डॉ.वसुंधरा नरदेव गुडे व श्रीमती कांचनदेवी शास्त्री यांनी महिला जागृती संदर्भात मार्गदर्शन केले. तर दि.२९ला दुपारी सामूहिक यज्ञोपवीत संस्कार पार पडला.

हा तीन दिवसीय कार्यक्रम अतिशय नियोजनबद्धपणे पार पडला कार्यकर्त्यांनी खूपच मेहनत घेऊन कार्यक्रमाला शहरी भागांपेक्षा सरस करून दाखविले. दररोज सकाळी व संध्याकाळची सर्वांची भोजनाची व्यवस्था करण्यात आल्याने कार्यक्रमात महिला व पुरुषांची संख्या वाढत गेली.

कार्यक्रम यशस्वी करण्यासाठी सर्वश्री अशोकराव कातपुरे, भागवत आरदवाड, विजयपाल कुल्ले, पंढरीनाथ चामे, रघुनाथ तेलंगे, बब्रुवाहन शिंदे, विद्यासागर आरदवाड, चंद्रकांत कुल्ले, माधव आरदवाड, अनिल कुल्ले, चंद्रपाल आरदवाड, किशनराव शिंदे आदींनी अहोरात्र परिश्रम घेतले.

वार्ता विशेष

सोलापूर येथे म.दयानंद बोधोत्सव साजरा

महर्षी दयानंद बोधोत्सवाच्या निमित्ताने सोलापूर येथील आर्य समाजात पं.राजवीरजी शास्त्री यांच्या पौरोहित्याखाली 'महापुरुष प्रशंसन यज्ञ' संपन्न झाला. यात सर्वश्री भाऊसाहेब सुतार, नेताजी चव्हाण, मारुती कांबळे, बाळासाहेब शिंदे, सुरेश काळे, राजेंद्र राठोड, जाधव, गुरव, मेडपल्ली, युवराज सुरवसे व प्रा.एस.बी. क्षीरसागर हे यजमान पदी आसनस्थ होते.

श्री सुभाषजी गायकवाड यांच्या सुमधुर भजनांनी ज्ञानसत्राला सुरुवात झाली. सौ.सुजाता शास्त्री यांच्या हस्ते व प्रा.एस.बी.क्षीरसागर यांच्या प्रमुख उपस्थितीत प्रा.डॉ.ज्योती रामचंद्र सुरवसे

यांचा पुष्पहार व वैदिक ग्रंथ देऊन विशेष सत्कार करण्यात आला. प्रा.डॉ.ज्योती या डी.ए.वी.कॉलेज मध्ये इतिहासाच्या सहयोगी प्राध्यापिका असून त्यांनी नुकतीच पीएच.डी. मिळविली आहे. या प्रसंगी बोलतांना त्या म्हणाल्या, 'स्वामी दयानंद हे संन्यासी योद्धे होते. त्यांनी धर्माला वैज्ञानिक दृष्टी दिली. सुधारणेला शास्त्रीय आधार दिला. अज्ञान, अंधविश्वास, दुष्टरूढी-परंपरेला मूठमाती दिली. म्हणूनच ते महाराष्ट्रातील सुधारकांचे आवडते झाले.'

श्री भाऊसाहेब सुतार यांनी कार्यक्रमाचे सूत्रसंचालन केले, तर सुजाता शास्त्री यांनी सर्वांचे आभार मानले.

परळीत आर्यसमाज स्थापना दिन साजरा

भारतीय सणांचे निसर्ग व सत्यज्ञानाशी घनिष्ट नाते असून गुढीपाडव्याच्या निमित्ताने विवेकपूर्ण विचारांची चैत्रपालवी फुटल्यास मानवी जीवनात खऱ्या अर्थाने शाश्वत सुखाचा सुगंध दरवळेल', असे विचार वैदिक विद्वान प्रा.चंद्रेश्वर शास्त्री यांनी मांडले.

परळी येथील आर्यसमाजात

भारतीय नववर्ष उत्सव व आर्यसमाजाच्या १४३व्या स्थापना दिनानिमित्त आयोजित विशेष प्रबोधनपर कार्यक्रमात प्रमुख मार्गदर्शक वक्ते म्हणून बोलत होते. अध्यक्षस्थानी प्रधान जुगलकिशोर लोहिया तर प्रमुख पाहुणे म्हणून वैजनाथ देवस्थान समितीचे सचिव श्री राजेश देशमुख हे उपस्थित होते. व्यासपीठावर मंत्री उग्रसेन

राठौर हे ही उपस्थित होते. सुरुवातीला सौ.कंचनदेवी शास्त्री यांनी भजन गायिले.

आपल्या भाषणात श्री शास्त्री यांनी गुढी पाडवा या सणाचे धार्मिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय व आध्यात्मिक महत्व विशद करून आर्य समाज स्थापना दिनाचे महत्व प्रतिपादित केले. याप्रसंगी परळी मेडिकल असोसिएशनच्या अध्यक्षपदी डॉ.मधुसुदन काळे यांची निवड झाल्याबद्दल व प्रा.श्री.जगदीश देविदासराव कावरे यांनी क्रीडा विषयात

पीएचडी मिळवल्याबद्दल त्यांचा सत्कार करण्यात आला. दरम्यान सकाळी पं.वीरेंद्र शास्त्री यांच्या पौरोहित्याखाली झालेल्या नववर्ष यज्ञात सर्वश्री शैलेश दोडिया, मनोज कलंत्री, यज्ञप्रकाश हुलगुंडे यांनी सपत्नीक भाग घेतला. यज्ञानंतर श्री जुगलकिशोर लोहिया यांच्या हस्ते ध्वजारोहन करण्यात आले. कार्यक्रमाचे प्रास्ताविक लक्ष्मणराव आर्य व सूत्रसंचालन प्रा.अरुण चव्हाण यांनी केले, तर आभार प्रा.डॉ. कावरे यांनी मानले.

माता जिंदम यांचा '÷शताब्दी महोत्सव' साजरा

नांदेड येथील आर्य समाजाच्या वरिष्ठ कार्यकर्त्या श्रीमती राधाबाई शिवरामजी जिंदम यांनी वयाची १०० वर्षे पूर्ण केल्याबद्दल त्यांचा '÷शताब्दी महोत्सव' नुकताच साजरा करण्यात आला. वाजेगांव(नांदेड) येथील वैदिक सेवाश्रमात संपन्न झालेल्या या कार्यक्रमाच्या अध्यक्षस्थानी डॉ.तेजस्विनी वाडेकर या होत्या. तर प्रमुख पाहुण्या म्हणून सामाजिक कार्यकर्त्या सौ.शोभाताई जाधव या उपस्थित होत्या. यावेळी सौ.जाधव यांच्या हस्ते श्रीमती जिंदम यांचा '÷आदर्श महिला कार्यकर्त्या' हा पुरस्कार प्रदान करून गौरव केला.

याप्रसंगी सौ.जाधव म्हणाल्या,

÷शतायुषी श्रीमती जिंदम माताजींनी वैदिक सेवाग्राम व आर्य समाजाच्या माध्यमातून सुमारे ७५ वर्षे जी भरीव सामाजिक सेवा केली, ती नव्या पीढीसाठी प्रेरणादायी व अनुकरणीय आहे.' यावेळी राधाबाईंच्या कन्या सौ.डॉ.शारदा तुंगार व प्राचार्या डॉ.अंजली जोशी यांनी माताजींचा गौरव करीत त्यांनी हैदराबाद मुक्ती संग्राम व सामाजिक समतेच्या लढ्यात दिलेल्या योगदानाबद्दल त्यांची कृतज्ञता व्यक्त केली. कार्यक्रमात अनुक्रमे सौ.ज्योती पवार, सौ.क्रांती वडळे, सुशीलाबाई जाधव आदींचीही भाषणे झाली. शेवटी राधाबाईंचे जावई प्राचार्य देवदत्त तुंगार यांनी सर्वांचे आभार मानले.

स्वा.सै.मारुतीराव सुरावार यांचा स्मृतिदिवस

शहापूर येथील आर्य समाजाचे हेते. यावेळी पार पडलेल्या स्मृतियज्ञात माजी प्रधान व स्वा.सै.दिवंगत श्री धोंडिबा मारुतीराव सुरावार, सुरेश रामराव मारुतीराव सुरावार यांचा प्रथम स्मृतिदिवस सुरावार, कन्या-जावई, नातू हे यजमान दि.१० मे २०१७ रोजी साजरा करण्यात म्हणून उपस्थित होते. या प्रसंगी आला. गावातील विठ्ठल मंदिर सभागृहात पं.वैजनाथअप्पा करकेले यांनी भजन सादर पार पडलेल्या या कार्यक्रमाच्या केले. तर श्री हरिसिंहजी आर्य व अध्यक्षस्थानी आर्यवीर दलाचे प्रधान डॉ.नयनकुमार आचार्य यांनी उपस्थितांना प्रशिक्षक श्री हरिसिंहजी आर्य(दिल्ली) हे मार्गदर्शन केले.

नांदेड जिल्हा शिक्षणाधिकाऱ्यांचे आदेश

÷आर्य विद्या मंदिराचे इतरत्र स्थलांतर करावे'

नांदेड येथील जुना मोंढा भरते. श्री चंद्रशेखर कुन्हे आणि श्री शरद परिसरातील आर्यसमाज मंदिराच्या चालीकवार या दोन ख्यातनाम इंजिनिअरनी इमारतीमध्ये भाडेकरू तत्वावर सुरु इमारतीची पाहणी करून आपल्या असलेल्या आर्य विद्या मंदिर या मराठी स्ट्रक्चरल ऑडिटमध्ये ही बिल्डींग प्राथमिक शाळेचे इतरत्र स्थलांतर करावे, वास्तव्यास योग्य नाही. ती ताबडतोब असा आदेश नांदेड जिल्हा परिषदेच्या पाडून टाकावी, असे अहवाल नांदेड प्राथमिक विभागाचे शिक्षणाधिकारी श्री मनपाला दिले. हे दोन्ही अहवाल जिल्हा संदीप सोनटक्के यांनी शाळेचे मुख्याध्यापक परिषद शिक्षण विभागाला प्राप्त झाले श्री संभाजी राजुरे यांना पत्र पाठवून दिला आहेत. आहेत.

आहे. २० एप्रिल रोजी हा आदेश महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेचे काढण्यात आला आहे. प्रधान डॉ.ब्रह्ममुनी यांच्या मार्गदर्शनाखाली व कोषाध्यक्ष श्री उग्रसेन राठौर यांच्या नेतृत्वाखाली श्री व सौ.कुलकर्णी, श्री व सौ.सत्येंद्र आर्य, श्रीमती मारंपल्ले, श्री व सौ.भांगे, श्री व सौ.तुंगार यांच्या एका

शिष्टमंडळाने जिल्हाधिकारी, जिल्हा पोलीस प्रमुख, जि.प.शिक्षण विभाग यांना भेटून शाळेचे इतरत्र त्वरित स्थलांतर करावे आणि ते शक्य नसेल तर अवघे दीडशे विद्यार्थी या शाळेत आहेत. त्यांचे येत्या जूनपासून जवळपासच्या शाळेत समावेशन करावे, अशी मागणी केली होती. शाळेत सात शिक्षक व मुख्याध्यापक असून कोणासही पाच वर्षांपासून पगार नसतांना शिक्षक

वेठबिगार म्हणून फुकट राबत आहेत. कारण त्यांच्या नेमणुका श्री तेरकर यांनी गैरकायदेशीरपणे केल्या आहेत. शिक्षणाधिकाऱ्यांनी मुख्याध्यापकास लिहिलेल्या पत्राच्या प्रती सर्वश्री अशोक तेरकर, सेक्रेटरी प्राचार्य तुंगार, श्री गोविंदवार, डॉ.सौ.शारदा तुंगार, (अध्यक्ष आर्य समाज नांदेड) यांना दिल्या आहेत.

सोलापुरात प्रधानपदी चतुर्वेदी तर मंत्रीपदी उकीरडे

सोलापूर येथील आर्यसमाजाची त्रैवार्षिक निवडणूक नुकतीच पार पडली. वर्तमान प्रधान भाऊसाहेब सुतार यांच्या अध्यक्षतेखाली आयोजित बैठकीत आगामी ३ वर्षांसाठी प्रधानपदी श्री मेघराज चतुर्वेदी यांची तर मंत्रीपदी श्री देविदास उकीरडे यांची बिनविरोध निवड करण्यात आली. नूतन कार्यकारिणी पुढीलप्रमाणे आहे-

- *प्रधान- मेघराज चतुर्वेदी
- *उपप्रधान- दत्तात्रय जवळकर
- *मंत्री- देविदास उकीरडे
- *उपमंत्री- विजय कार्यमोल
- *कोषाध्यक्ष- केदार पुजारी
- *पुस्तकाध्यक्ष-शरद दोशट्टी
(उत्तम मुनिजी)

*धनाधिष्ठाता-सुभाष गायकवाड,

*वेदप्रचार अधिष्ठाता-

आदित्य सुद्धालकर

*आर्यवीरदल अधिष्ठाता-रवी यन्नम

*संरक्षक-बालाप्रसाद सोनी,

शंकरराव बिराजदार,

*अंतरंग सदस्य-

सर्वश्री सुरेश बुरबुरे, नंदकिशोर गंगाजी, भाऊसाहेब सुतार, मीलींद भंडगे, चंद्रकांत शिंदे, शरद होमकर, राजेंद्र खराडे, मधुकर घायाळ, प्रमोद चिंचुरे*

या सर्व नव्या पदाधिकाऱ्यांचे अभिनंदन व त्यांच्याकडून भविष्यात आर्यसमाजाचे प्रचारकार्य वाढीस लागावे, ही अपेक्षा *

राज्यात सभेतर्फे श्रावणी वेदप्रचार भव्य प्रमाणात

दरवर्षी प्रमाणे याही वर्षी महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेच्या वतीने राज्यस्तरीय श्रावणी वेदप्रचार कार्यक्रम घेण्यात येत असून सभेतर्फे विद्वान व भजनोपदेशकांना निमंत्रित करण्याचे तसेच तारखा निश्चित करण्याचे कार्य सध्या सुरु आहे. येत्या २४ जुलै पासून सुरु होणाऱ्या या श्रावणी कार्यक्रमांना व्यापक रूप देण्यात येणार असून सभेच्या अंतर्गत जवळपास १३० आर्य समाजांना वेगवेगळ्या तारखांना विविध विद्वान व भजनोपदेश पाठविले जाणार आहेत. हा श्रावणी कार्यक्रम दि.२१ ऑगस्ट पर्यंत चालणार आहे. 'मानवजीवन कल्याण वेदप्रचार अभियान' या

कार्यक्रमांतर्गत हे श्रावणी उत्सव सर्वाधिक समाजोपयोगी व्हावेत. तसेच तळागळापर्यंत आर्यसमाजाची मानवीय मूल्याधिष्ठित श्रेष्ठ विचारसरणी पोहोचवी या दृष्टीने श्रावणी कार्यक्रमांचा आराखडा तयार करण्यात येत आहे. यासाठी उत्तर भारतातून १० ते १२ तर राज्यातून ५० हून अधिक मराठी भाषिक विद्वानांना आमंत्रित करण्यात येत आहे.

तरी राज्यातील विविध आर्य समाजांनी श्रावणी वेदप्रचार उत्सवांच्या तयारीला लागावे, गावातून वेदप्रचार निधी संकलित करावा, असे आवाहन मंत्री श्री माधवराव देशपांडे यांनी केले आहे.

सविता जोशी यांच्या 'मराठी ऋग्वेद ग्रंथा'चे प्रकाशन

प्रसिद्ध आर्य अनुवादिका व लेखिका सौ.सवितादेवी बळवंतराव जोशी यांनी अनुवादित केलेल्या 'ऋग्वेद' (मराठी भाषांतर) ग्रंथाचे प्रकाशन नुकतेच प्रख्यात वेदविदुषी डॉ.सूर्यदेवी चतुर्वेदाचार्या यांच्या हस्ते करण्यात आले. यावेळी वेदपाठी ब्रह्मवंदांसह सामाजिक व राजकीय क्षेत्रातील मान्यवरांची उपस्थिती होती.

सौ.जोशी यांनी ऋग्वेदाच्या ४,५,६ व ७ मंडळातील हिंदी भावार्थाचा

अनुवाद सदर ग्रंथात केला आहे. यापूर्वी १ ते ३ मंडळातील मंत्राचा भावार्थ अनुवादित झाला आहे. यावेळी आचार्या डॉ.सूर्यदेवी यांनी वेदज्ञान सर्वांसाठी खुले करणाऱ्या युगपुरुष म.दयानंदांचे गौरवगान करून मराठी वाचकांसाठी सौ.जोशी यांनी या ग्रंथाच्या रूपाने संधी उपलब्ध करून दिल्याबद्दल त्यांचे अभिनंदन केले. दयाराम बसैये यांनी प्रास्ताविक केले, तर आभार जोगेंद्रसिंह चौहान यांनी मानले.

लातूरचा वार्षिकोत्सव उत्साहात

लातूर येथील गांधी चौक, आर्य भजनोपदेशकाच्या रूपाने आर्यसमाजाचा ८३ वा वार्षिकोत्सव बिजनौर(उ.प्र.) येथून आमंत्रित पं.श्री दि.१४, १५ व १६ मार्च २०१७ रोजी मोहितजी शास्त्री यांनी विविध भजने सादर उत्साहाने साजरा करण्यात आला. यात केली. कार्यक्रमाच्या सफलतेसाठी वैदिक विद्वान् म्हणून पं.राजवीरजी उपप्रधान श्री ओमप्रकाश पाराशर, मंत्री शास्त्री(सोलापुर) यांनी श्रोत्यांना विविध चंद्रभानू परांडेकर, उपमंत्री धीरेंद्र पाटील विषयांवर बहुमोल मार्गदर्शन केले, तर आर्दींनी विशेष परिश्रम घेतले.

श्री बसैये यांना 'वीर सावरकर रत्न पुरस्कार'

प्रांतीय सभेचे उपप्रधान व आर्य आले. सावरकरांच्या ५० व्या आत्मार्पण समाज, संभाजीनगर(औरंगाबाद) चे मंत्री दिनानिमित्त आयोजित भगुर(नाशिक) येथे श्री दयारामजी बसैये यांनी सामाजिक, आयेजित साहित्य संमेलनात मान्यवरांच्या धार्मिक व आर्य समाजाच्या माध्यमातून उपस्थितीत विधानसभेचे अध्यक्ष केलेल्या वेदप्रचार कार्याच्या अनुषंगाने हरिभाऊ बागडे यांच्या हस्ते श्री बसैये त्यांना भगूर येथील स्वातंत्र्यवीर सावरकर यांना हा पुरस्कार प्रदान करण्यात आला. स्मृति प्रतिष्ठानच्या वतीने 'वीर सावरकर हा पुरस्कार मिळाल्याबद्दल प्रांतीय आर्य रत्न पुरस्कार' प्रदान करून गौरविण्यात प्रतिनिधी सभेने त्यांचे अभिनंदन×

प्रा.कावरे यांना पीएच.डी.प्रदान

परळी येथील आर्य समाजाचे जाहीर सत्कार करण्यात आला.डॉ.कावरे युवा कार्यकर्ते व आर्यवीरदलाचे प्रशिक्षक हे परळीच्या स्वामी विवकानंद वरिष्ठ प्रा.श्री जगदीश देविदासराव कावरे यांनी महाविद्यालयात क्रीडा विभाग प्रमुख असून शारीरिक शिक्षण या विषयांवर नुकतीच आर्य समाजाच्या विविध उपक्रमात पीएच.डी. ही पदवी संपादित केली आहे. हिरिरीने सहभागी होतात.वरिष्ठ आर्य डॉक्टरेट मिळाल्याबद्दल श्री कावरे यांचा कार्यकर्ते श्री देविदासराव कावरे यांचे ते आर्य समाज, परळीच्या वतीने प्रधान श्री द्वितीय सुपुत्र आहेत. या यशाबद्दल त्यांचे जुगलकिशोर लोहिया यांच्या हस्ते यांचा सभेतर्फे हार्दिक अभिनंदन...×

स्वा.सै.लक्ष्मणराव देवणे यांचे देहावसान

हैद्राबाद स्वातंत्र्य संग्रामात सहभागी देशभक्त, वयोवृद्ध आर्यसमाजी कार्यकर्ते स्वा.सै.श्री लक्ष्मणराव तुळजाराम देवणे यांचे बोरुळ येथे दि.२० फेब्रुवारी रोजी दुपारी १ वा. च्या सुमारास वृद्धापकाळाने दुःखद निधन झाले. मृत्युसमयी ते ९३ वर्षे वयाचे होते. त्यांचे पश्चात् १ मुलगा, मुलगी, नातू असा परिवार आहे.

गावातील प्रख्यात आर्यसमाजी भीमराव मुळखेडे व माधवराव कुलकर्णी यांच्या संपर्कांमुळे लक्ष्मणराव विद्यार्थीदशेतच आर्यसमाजाकडे वळले. चळवळ्या व्यक्तिमत्वामुळे त्यांनी हैद्राबाद स्वातंत्र्य संग्रामात उडी घेतली. त्यांनी ६

वर्षांची कारावासाची सजा झाली. त्यांपैकी ५ महिने ११ दिवस त्यांनी प्रत्यक्ष तुरुंगवास भोगला होता. आर्यसमाजाच्या विविध कार्यक्रमात ते सहभागी होत असत. श्री देवणे फारच उत्साही होते. ठिकठिकाणच्या कार्यक्रमात ते सहभागी होत असत. दरवर्षी महाराष्ट्र आ.प्र.सभेच्या वतीने राज्यस्तरीय श्रावणी वेदप्रचार अभियानात ते 'भजनोपदेशक' म्हणून सहभागी होत असत. 'धर्मपर हुआ श्याम बलिदान...x' हे गीत ते मोठ्या दमदार आवाजात सादर करीत असत. त्यांच्या पार्थिवावर दुसऱ्या दिवशी पं.प्रकाश आर्य व रामचंद्र गरड यांनी वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार केले.

भगवानराव भोसीकर यांचे निधन

कंधार येथील आर्य समाजाचे अनुयायी व सेवानिवृत्त गटविकास अधिकारी श्री भगवानराव नारायणराव भोसीकर यांचे नुकतेच वार्धक्याने दुःखद निधन झाले. मृत्युसमयी ते ८२ वर्षे वयाचे होते. त्यांच्या पश्चात् पत्नी, तीन मुले, एक मुलगी, सुना, नातवंडे असा परिवार आहे.

स्व.श्री भोसीकर हे सामाजिकतेची जाण असलेले एक स्वाध्यायशील असे व्यक्तिमत्व होते. आर्य समाजाच्या विचारसरणीचा त्यांच्यावर मोठा प्रभाव होता. दुसऱ्या दिवशी त्यांच्या पार्थिवावर अंत्यसंस्कार करण्यात आले.

किशनराव राऊत यांना पत्नीशोक



महाराष्ट्र आर्य
प्रतिनिधी सभेच्या
जातिनिर्मूलन
विभागाचे प्रमुख श्री
किशनरावजी
राऊत(बोरगांवकर)

यांच्या धर्मपत्नी सौ.केशरबाई राऊत यांचे
दि.२२ एप्रिल २०१७ रोजी स.१० वा.
वृद्धापकाळाने दुःखद निधन झाले. मागील
५-६ वर्षांपासून त्या गुडघेदुखीने
आजारी होत्या. अलीकडील दीड-दोन
वर्षांत त्यांची प्रकृती अधिक खालावत
गेली. त्यांच्या पश्चात पति श्री किशनराव,
दोन मुले अभियंता डॉ.क्रांतीकुमार व
डॉ.कवींद्र, कन्या, सुना, जावई, नातवंडे
असा परिवार आहे.

उदगीर हे त्यांचे माहेर × तेथील
वेदानुगामी श्री मल्लप्पा सरसंबे यांच्या
केशरबाई या कन्या × लहानपणापासूनच

त्यांचेवर आर्य समाजाचे संस्कार होते.
२० ऑगस्ट १९६७ साली श्री
किशनरावांशी त्यांचा आंतरजातीय विवाह
झाला. सासरी आल्यानंतर ही आर्य
संस्कारांचा वारसा त्यांनी मोठ्या
खंबीरपणे जोपासला. पतिदेवांच्या
सामाजिक, धार्मिक व जातिनिर्मूलनाच्या
कार्यात त्यांनी मोलाची साथ दिली.
सेवाभाव आणि शांत व मनमिळाऊ
स्वभाव ही त्यांची गुणवैशिष्ट्ये× विशेष
म्हणजे त्या रुग्णशय्येवर असतांना पति
श्री किशनरावांनी त्यांची मोठ्या निष्ठेने
व्रतस्थ राहून सेवा केली.

सौ.केशरबाईंच्या पार्थिवावर
सर्वश्री प्रा.अखिलेश शर्मा, प्रा.चंद्रेश्वर
शास्त्री, ज्ञानकुमार आर्य आदींनी पूर्ण
वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार केले.
तिसऱ्या दिवशी घरी शांतियज्ञ संपन्न
झाला.

सोपानराव तोंडचिरकर यांना पत्नीशोक

उदगीर येथील आर्य समाजाचे
वरिष्ठ कार्यकर्ते व स्थानिक किसान शिक्षण
प्रसारक मंडळाचे माजी कोषाध्यक्ष श्री
सोपानराव तोंडचिरकर यांच्या पत्नी
सौ.निर्मलाबाई तोंडचिरकर यांचे दि.२९

एप्रिल रोजी सकाळी अल्पशा आजाराने
दुःखद निधन झाले. मृत्युसमयी त्या
६७ वर्षे वयाच्या होत्या. त्यांच्या मागे
पति, चार मुले, एक मुलगी, सुना व
नातू-नाती असा परिवार आहे.



श्रीमती प्रेमाबाई या लातूरच्या

खाडगाव परिसरातील क्रान्तिनगर भागात निवास करित होत्या. जीवनभर शिक्षिका या पदावर राहुन त्यांनी ज्ञानदानाचे पवित्र कार्य केले. त्यांच्या सान्निध्यात घडलेले अनेक विद्यार्थी आज उच्च पदावर कार्यरत आहेत. सामाजिक जाणीव आणि वैदिक विचार यांची देणगी त्यांना आपले स्वा.सै.पिताश्री शंकरराव जडे यांच्याकडून मिळाली होती. प्रेमाबाईंच्या आकस्मिक निधनाने आंबेकर व जडे कुटुंबावर दुःखाचा डोंगर कोसळला आहे. त्यांच्या पार्थिवावर पं.ज्ञानकुमार आर्य व वैजनाथराव हालिंगे यांनी पूर्ण वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार केले. यावेळी मोठ्या प्रमाणावर नागरिक उपस्थित होते.

सोममुनिजींना पत्नीशोक

गावोगावी फिरून यज्ञ करणारे वेदप्रचारक श्री पं.सोममुनिजी वानप्रस्थी यांच्या धर्मपत्नी सौ.सिंधुबाई स्वामी यांचे दि.१० मे २०१७ रोजी संध्याकाळी ७.३० वा. बार्शी येथे अल्पशा आजाराने दुःखद निधन झाले. मृत्युसमयी त्या ७५ वर्षे वयाच्या होत्या. त्यांच्या मागे पति, दोन मुले श्री रमेश व उमेश, मुली सौ.विद्या व सौ.शोभा, सुना व नातवंडे असा परिवार आहे. मृत्युपूर्वी दोन-तीन दिवस अगोदर माता सिंधुबाईंना अर्धांगवायूचा झटका आला होता. कुटुंबियांनी त्यांना तातडीने स्थानिक मामा जगदाळे रुग्णालयात दाखल केले. शेवटी उपचारादरम्यान त्यांची प्राणज्योत मालवली.

प्रेमळ, कष्टाळू, सेवाभावी व परोपकारी वृत्तीच्या आदर्श गृहिणी होत्या. पति श्री सोमनाथ स्वामी(सोममुनिजी) हे पूर्वीपासूनच वैराग्यवृत्तीचे असल्याने त्यांचे घराकडे लक्ष कमी असायचे. पुढे तर वानप्रस्थाश्रमी बनून ते घरी असून नसल्यासारखेच होते. अशा परिस्थितीत गेल्या ३० वर्षांपासून घरची सारी जबाबदारी वात्सल्यमूर्ती सिंधुबाईंनी खंबीरपणे उचलली. मुला-मुलींना सुसंस्कारित बनवून त्यांना आर्थिक दृष्ट्या सबल बनविले. अशा माऊलीच्या निधनाने स्वामी कुटुंबातील मातृछाया लुप्त झाली आहे. स्व.सिंधुबाईंच्या पार्थिवावर रात्री उशीरा शोकाकुल वातावरणात

सौ.सिंधुबाई शांत, मितभाषी,

अंत्यसंस्कार करण्यात आले.

वरील सर्व दिवंगत आत्म्यांना महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेची भावपूर्ण श्रद्धांजली × शोकाकुल परिवाराच्या दुःखात आर्यजन सहभागी आहेत.



स्वामी श्रद्धानंद (हरिश्चंद्र गुरुजी) जन्मशताब्दी वर्ष

असंख्य विद्यार्थ्यांना वैदिक मानवीय मूल्यांची जाणीव करून देऊन राष्ट्राचे आदर्श नागरिक घडविणारे तपस्वी व्यक्तिमत्व व महाराष्ट्र सभेचे आधारस्तंभ(संरक्षक) पू.स्वामी श्रद्धानंदजी सरस्वती(हरिश्चंद्र गुरुजी) यांचे जन्मशताब्दी वर्ष येत्या दिवाळीपासून सुरु होत आहे. त्यानिमित्त सभेतर्फे वर्षभरात विविध समाजोपयोगी कार्यक्रम घेण्यात येणार आहेत. तरी आपण या उपक्रमांत उत्साहाने सहभागी व्हावे. - सभामंत्री



शिवणखेड में
आयोजित
त्रिदिवसीय
वेदपारायण यज्ञ में
विद्वान पुरोहित व
यजमान दम्पती।

आर्यसमाज रामनगर
के अतिथिगृह निर्माता
श्री जयदेवजी आर्य
का सम्मान करते हुए
सभा के प्रधान
डॉ.ब्रह्ममुनिजी, मंत्री
श्री देशपांडे, उपप्रधान
श्री बसैये एवं रामनगर
के प्रधान श्री मोरे ।



पीएच.डी.उपाधि
मिलने पर
आर्यसमाज परली
के युवा कार्यकर्ता
प्रा.श्री जगदीश
कावरे का सम्मान
करते हुए मन्त्री
श्री उग्रसेनजी
राठौर ।



÷ऋग्वेद भावार्थ' के मराठी अनूदित ग्रंथ का विमोचन करते हुए आर्यविदुषी डॉ.सूर्यदेवी चतुर्वेदा। साथ में हैं आर्य कार्यकर्ता व वैदिक पंडित ।

शिवणखेड
आर्यसमाज भवन
के उद्घाटन
अवसरपर मार्गदर्शन
करते हुए पूर्व
विधायक श्री
बब्रुवाहनजी
खंदाडे।



परली में आयोजित
÷आर्यसमाज
स्थापना दिवस'पर
मार्गदर्शन करते हुए
प्रा.चंद्रेश्वरजी
शास्त्री। मंच पर हैं
सर्वश्री राजेश
देशमुख,
लोहिया, राठौरजी।

परिवारों के प्रति सच्ची निष्ठा,
स्नेह के प्रति जागरूकता
श्रद्धा एवं गुणवत्ता, करोड़ों
परिवारों का विश्वास, यह है
एम.डी.एच. का इतिहास जो
पिछले १३ वर्षों से हर कसौटी
पर खरे उतरे हैं - जिनका कोई
विकल्प नहीं। जी हां यही हैं
आपकी सेहत के रखवाले



मसाले
असली मसाले
सब-सब

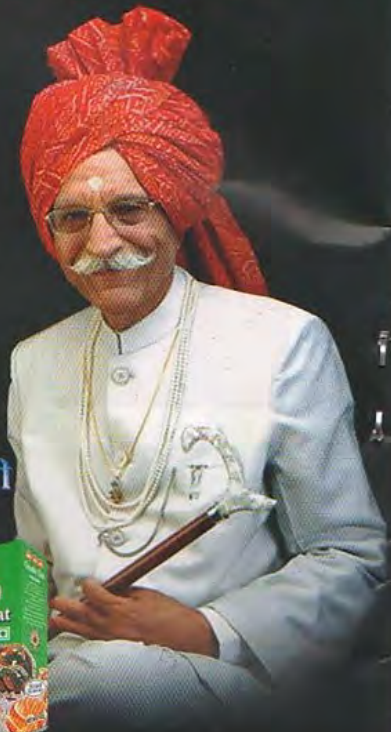
MAHASHIAN DI HATTI LTD.

Regd Office : MDH House,
9/44 Kirti Nagar, New Delhi-110015,
Ph : 25939609, 25937987
Fax : 011-25927710
E-mail : mdhltd@vsnl.net
Website : www.mdhspices.com



लाजवाब खाना !
एम.डी.एच. मसाले
हैं ना !

आर्य जगत के दानवीर भामाशाह
महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त
महाशय धर्मपालजी



Reg.No.MAHBIL/2007/7493*Postal No.L/Beed/18/2015-17

सेवा में,
श्री.

प्रेषक -

मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
आर्य समाज, परली-वैजनाथ.
पिन ४३९ ५९५ जि.बीड (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इस स्थलपर मुद्रित कर
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के संपर्क कार्यालय आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३९५९५ (महाराष्ट्र) इस स्थान से प्रकाशित किया।

भावपूर्ण श्रद्धांजलि !

॥ ओ३म् ॥

जीवेत् शरदः शतम् !



स्व.श्री.सदाशिवरावजी गुट्टे

आर्य समाज, परली-वैजनाथ, जि.बीड
के दिवंगत वरिष्ठ कार्यकर्ता, भजनोपदेशक
तथा कट्टर वेदानुगामी व्यक्तित्व
स्व.श्री.सदाशिवरावजी पाटलोबा गुट्टे
के द्वितीय स्मृतिदिवस (७ जून २०१७) के उपलक्ष्य में
उनकी धर्मपत्नी **श्रीमती सुशीलाबाई गुट्टे व परिवार**
की ओर से वैदिक गर्जना मासिक का रंगीन मुखपृष्ठ भेंट



श्रीमती सुशीलाबाई गुट्टे

वर्ष १७ अंक ७/६ १० मई/जून २०१७



महान समाजसुधारक राजा एवं म.दयानन्द के अनुयायी



छत्रपति राजर्षि शाहू महाराज

जन्म दिवस(२६ जून) पर शतशः नमन ×



शहापुर येथे स्व.लक्ष्मणराव आर्य वैदिक सभागृहाचे उद्घाटन

देगलुर तालुक्यातील शहापुर गावच्या आर्य समाजाच्या नव्याने बांधण्यात आलेल्या सभागृहाचे उद्घाटन दि.१६ मे २०१७ रोजी संपन्न झाले. प्रसिद्ध आर्यसमाजी व्यक्तिमत्व व प्रखर वैराग्य वृत्तीचे कर्मठ आर्य कार्यकर्ते स्व.लक्ष्मणरावजी आर्य (बासरे) यांचे या आर्यसमाजाच्या उभारणीत सर्वाधिक योगदान असल्याने त्यांचे नाव या सभागृहास देण्यात आले आहे. २०१० साली येथील आर्य समाजाचे सक्रीय कार्यकर्ते श्री व्यंकटरेड्डी पुल्लागोर यांच्या विशेष प्रयत्नांनी नांदेडचे तत्कालीन खा.श्री.डी.बी. पाटील यांच्या खासदार फंडातून ५ लाख रुपयांचा निधी या सभागृहाच्या निर्मितीसाठी मिळाला होता. हा निधी अपूरा पडल्याने गावातील आर्यसमाज पदाधिकाऱ्यांनी २ लाख रुपयांचा निधी जमा केला व एक विशाल सभागृह बांधण्यात आले. हे सभागृह गेल्या कांही वर्षांपासून उद्घाटनाच्या प्रतीक्षेत होते. तेव्हा आर्य कार्यकर्त्यांनी एकत्र बैठक घेऊन यावर्षी या सभागृहाचे उद्घाटन करण्याचे निश्चित केले. त्यानुसार हा उद्घाटनाचा कार्यक्रम नागपूर खंडपीठाचे प्रसिद्ध विधीज्ञ व शेतकरी संघटनेचे ज्येष्ठ कार्यकर्ते अॅड.श्री दिनेश शर्मा यांच्या प्रमुख उपस्थितीत नुकताच संपन्न झाला. यावेळी प्रमुख पाहुणे म्हणून नांदेड जि.प.चे शिक्षण व आरोग्य सभापती श्री माधवराव मिसाळे गुरुजी, ज्येष्ठ कार्यकर्ते श्री रमेश पाटील हंगरगेकर आदी उपस्थित होते.

यावेळी श्री अॅड.शर्मा यांनी आर्यसमाजाच्या सामाजिक, राष्ट्रीय, धार्मिक व मानव समाज निर्मितीच्या कार्याची प्रशंसा करून जागतिक कल्याणासाठी महर्षी दयानंदांच्या विचारसरणीचा अंगिकार करावा, असे आवाहन केले. कार्यक्रमास आर्यसमाजाचे प्रधान गंगारेड्डी भूपतवार, मंत्री नरसारेड्डी यालावर, कोषाध्यक्ष हनमन्तू पुल्लागोर यांच्यासह गावातील सरपंच गंगारेड्डी कोटगिरे, माजी सरपंच विठ्ठलरेड्डी पुल्लागोर, डॉ.सुरेश पुल्लागोर, प्रा.तिरुपती रेड्डी इत्यादी उपस्थित होते.

